२. द्वितीय अध्याय

भीष्म साहनी– व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व

२. भीष्मसाहनी – व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व

२.१ : व्यक्तित्त्व

२.१.१ : भूमिका

२.१.२ : जन्म / जन्म स्थान

२.१.३ : पैतृक पार्श्वभू

२.१.४ : परिवार

२.१.५ : बाल्यकाल

२.१.६ : पारिवारिक परिचय

२.१.६.१ : पिताजी

२.१.६.२ : माताजी

२.१.६.३ : बडे भाई बलराज साहनी

२.१.६.४ : धर्मपत्नी शीला साहनी

२.१.६.५ : बेटी कल्पना / बेटा वरूण

२.१.७ : शिक्षा–दीक्षा

२.१.८ : मित्रत्त्व

२.१.९ : शौक

२.१.१० : व्यवसाय / नौकरी

२.१.११ : आजीविका / जीवन संघर्ष

२.१.१२ : स्वभावगत् विशेषताएँ

२.१.१२.१ : सादगी

२.१.१२.२ :सहनशील, भावुक और संवेदनशील

२.१.१२.३ :आतिथ्यशीलता

२.१.१२.४ :बातचीत में सहजता

२.१.१२.५ :विनम्रता

२.१.१२.६ :संकोची

२.१.१२.७ :निरंतर कार्यशील

२.१.१२.८ :विद्रोही

२.१.१२.९ :रहन–सहन

२.१.१२.१० :आचार–विचार

२.१.१२.११ :उच्च मनोभाव

२.१.१२.१२ :रूचियाँ

२.१.१२.१३ : वैचारिक प्रभाव

२.१.१३ : प्रेरणा स्थल और सृजन भूमिका

२.१.१४ : पुरस्कार एवं सन्मान

२.१.१५ : प्रगतिशील आंदोलन का इतिहास

२.१.१६ : परदेशगमन

२.१.१७ :निधन

२.२ : भीष्म साहनी कृतित्त्व का संक्षिप्त परिचय :

२.२.१ : कहानीकार भीष्म साहनी

२.२.१.१ : कहानी

२.२.१.१.१ : भाग्यरेखा

२.२.१.१.२ : पहलापाठ

२.२.१.१.३ : भटकती राख

२.२.१.१.४ : पटरियाँ

२.२.१.१.५ : वांङ्चू

२.२.१.१.६ : शोभायात्रा

२.२.१.१.७ : निशाचर

२.२.१.१.८ : पाली

२.२.१.१.९ : प्रतिनिधि कहानियाँ

२.२.१.१.१० : मेरी प्रिय कहानियाँ

२.२.१.१.११ : चर्चित कहानियाँ

२.२.१.१.१२ : डायन

२.२.१.१.१३ : निष्कर्ष

२.२.१.२ : उपन्यास

२.२.१.२.१ : झरोखे

२.२.१.२.२ : कड़ियाँ

२.२.१.२.३ : तमस

२.२.१.२.४ : बसंती

२.२.१.२.५ : कुंतो

२.२.१.२.६ : नीलू नीलिमा

२.२.१.२.७ : नीलोफर

२.२.१.३ : निबंध

२.२.१.४ : डायरी

२.२.१.५ : आत्मकथाकार

२.२.१.६ : बालसाहित्य

२.२.१.७ : अनुवादक

२.२.१.८ : संपादक

२. द्वितीय अध्याय

भीष्म साहनी – व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व

२. : प्रास्तावना

प्रेमचंद की कथापरंपरा के यथार्थवादी लेखको में अलगी पंक्ति में मकम्मल स्थान रखनेवाले कथाकार के रूप में भीष्म साहनी का नाम लिया जाता है। भीष्मसाहनीजी एक वाबपंथी प्रगतिशील साहित्यकार थे। वे आजीवन गरीब,पिछडे,शोषित,पीड्ित जनों के पक्ष में साहित्य रचना करते रहे, उनके दु:ख–दर्द को अपने लेखन में वाणी देने का प्रयास करते रहे। आजीवन उनकी दृष्टि यथार्थवादी थी । जीवन का यथार्थ ही साहित्य का यथार्थ होना चाहिए। उनका साहित्य उनके जीवनानुभव का प्रतिफलन है । हालाँकि उन्हें उपन्यासकार के नाते ही अधिक पहचाना जाता रहा परंतु इससे उनकी अन्य साहित्य विद्याओं का मूल्य कम नहीं होता । वे फिल्म अभिनेता बलराज साहनी के भाई है खुद उन्होंने भी फिल्मो में अभिनय किया है ।

किसी भी साहित्य सर्जक का व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व परस्पर सापेक्ष होता है । उसके व्यक्ति्व को उसके सृजन कर्म से पृथ्थक नहीं किया जा सकता ।

साहनीजी ने जीवन को जिस रूप में देखा, और समझा उससे उनके व्यक्तित्त्व की बहु आयामी रेखाएँ स्पष्ट से स्पष्टत्तर होती गई है। उनके साहित्य में सामन्तवाद, पूँजीवाद, वर्णभेद, धर्माड्म्बर, मध्यमवर्ग, शोषितवर्ग, शोषकवर्ग की संस्कृति का चित्रण मिलता है। राष्ट्रीय भावनात्मक एकता को उन्होंने अपने साहित्य में बढावा दिया है ।

२.१ : व्यक्तित्त्व

बहुमुखी प्रतिभा संपन्न भीष्म साहनी का व्यक्तित्त्व बडा ही अनोखा था। बहु आयामी व्यक्तित्त्व के संबंध में कहा जाये तो, 'सौम्य चेहरा, धीमा स्वर, संयत, शांत लेखक, वक्ता और अभिनेता, एक साथ तीन भूमिकाएँ निभाता हुआ । यह साहनीजी के जीवन की अद्‌भुत विशेषता थी, जरूरत के दबाव तले, समय के तकाजो को झेलते हुए अनेक भूमिकाएँ सम्पन्न करते

रहनेवाले साहनीजी के बारे में यह कहते जरा भी अतिशोक्ति नहीं होती कि घाट–घाट का पानी पीकर यह प्यासी साहित्य में डूबा हुआ सादगी– पसंद मिजाजी इन्सान हैं । उनकी शख्सियत की खामोशी भी बहुत कुछ कह जाती है । भीष्म साहनी के व्यक्तित्त्व में सादगी, सहजता, मृदुलता जैसी विशिष्टताएँ फूट–फूटकर भरी हुई है । उनका लेखकीय व्यक्तित्त्व सदा ही निम्नवर्ग का पक्षधर रहा हैं । उन्होंने मानवीय जीवन की विभिन्न अनुभूतियों को बारिकी से परखा है और अपने साहित्यमें निचोड़कर रख दिया हैं ।

२.१.२ : जन्म / जन्मस्थान

भीष्म साहनी का जन्म ८ अगस्त १९१५ में रावलपिण्डी जो पश्चिमी भारत का मशहूर शहर हैं वहाँ हुआ था । जो वर्तमान समय में पाकिस्तान हुआ है । साहनीजी अपने जन्म के बारे में कहते है कि, 'मेरा जन्म किस महीने की किस तारीख को हुआ इस विषय में माँ और पिताजी में एकमत नहीं था । मेरी माँ का कहना था कि मैं पने बडे भाई बलराज से एक साल और ग्यारह महीने छोटा था, जबकि पिताजी ने स्कूल में मेरे जन्मतिथि ८ अगस्त १९१५ लिखा दी थी, जो मुझे अपने भाई से ओर भी कुछ महीने छोटा करती थी । धीरे–धीरे जन्मतिथि पर मतभेद शांत पड गया और तिथि २ अगस्त १९१५ ही मान ली गई ।' (१)

२.१.३ : पैतृक पार्श्वभू

भीष्म साहनीजी के पूर्वज पंजाब के थे । शाहपुर जिले के भेरा नामक कस्बे में भीष्मजी के पूर्वज निवास करते थे । भेरा–जेहलम नदी के तट पर स्थित, सदियों पुराना मध्ययुगीन कस्बा था, जो उस जमाने में व्यापार और वाणिज्य का एक केन्द्र हुआ करता था । उनके माता–पिता लगभग २० साल तक पेशावर में रहे थे । पेशावर को छोड़ने की विषम परिस्थिति तब आई, जब उनकी गली में धाड़ा पड़ा और किसी भी वजह से १५ अगस्त १९४७ को देश की आजादी के साथ पंजाब दो टुकड़ों में बँट चुका । भीष्मजी का सारा परिवार रावलण्डी से उजड़कर जगह–

जगह बिखर गया । आखिर वे सब बम्बई आकर बलराज साहनी के पास स्थिर हुए । वहाँ कुछ समय पश्चात साहनीजी दिल्ही गये और वहाँ बसे ।

२.१.४ : परिवार

'भीष्मजी का घर भरा–पूरा था, परिवार में दो बहनें, बडे भाई, माताजी एवं पिताजी तथा घरका नौकर तुलसी ।' [२] भीष्मजी के पिता श्री हरबंसलाल साहनी और माँ श्रीमती लक्ष्मी देवी दोनों समाज सुधार के कामों से जुडे हुए थे । भीष्म साहनी श्री हरबंसलाल साहनी की सातवीं सन्तान थे । पहली पाँच बहनो के बाद स्वर्गीय बलराज साहनी का जन्म हुआ था । उनके जन्म के अवसर पर कोई बैड बाजा नहीं बजा क्योंकि उनके बडे भाई के जन्म के अवसर पर बैंड्बाजा सुनकर उनकी माँ बेहोश हो गई थी । उनके तायाजी, माँ की प्रसूतावस्था के वक्त बेटे की प्रतिक्षा में बाहर खाट पर बैठे रहते । जब पता चलता कि लड्की पैदा हुई तो झटकते, बड–बडाते हुए उठ जाते । अपने आरम्भिक जीवन की पारिवारिक स्थिति के सम्बन्ध में भीष्मजी लिखते है, ''मेरे घर में जन्म लेने से पहले मेरी तीन बहने स्वर्ग सिधार चुकी थीं । मेरा बचपन अभी समाप्त नहीं हुआ था कि एक और बहन दगा दे गयी । और में अभी कॉलिज में पढता था, जब पाँचवी बहन ने भी बिदा ले ली और घरमें हम केवल दो भाई रह गयें । ''[३]

२.१.५ : बाल्यकाल / संस्कार

भीष्मजी का बाल्यकाल अपने साथ अनेक स्मृतियों को संजोये हुए था । साहनीजी के जीवन परख ग्रंथो से यह मालूम होता है कि उनका बचपन शरारत की अंगडाई में नहीं बिता । वे स्वयं कहते है कि, 'बचपन का माहौल अंधीरी गुफा जैसा लगता है ।'[४] साहनीजी के बचपन ने उन्हें कुछ दिया हो या न दिया हो पर थोडा बहुत दर्द जरूर दिया है । धनी परिवार के बच्चोन जैसा तिरता सा उनका बचपन नहीं था । बचपन के दिनों को इतनी आसानी से अभिव्यक्त कर पाना संभव नहीं होता है । साहनीजी स्वयं लिखते है, ''अपने बचपन के बारे में सोचता हुँ तो सबसे पहले तो बीमारी का विस्तर ही आँखो के सामने उभरता है और दबी–दबी छटपटाहट

और तरह–तरह की भूल । बचपन में मैं बार–बार बीमार पड्ता था और बीमारी के दिनों में घण्टों अकेला पड रहता था और अकसर मेरा पाँच भाई के पाँवो की आहट की ओर लगे रहते । कभी पिता जी भारी कदम, सीढियाँ चढकर उभर आते, फिर वह थर्मामीटर निकालकर उसे बार–बार झटकते, वह मेरे माथे पर हाथ फेरते, फिर जेब में से इकन्नियाँ – दुअन्नियाँ पैसे निकालकर मेरे सिराहने के नीचे रख देते और फिर थोडी देर बाद सीढियाँ उतर जाते । घर फिर मौन छा जाता । लंबी दोपहर अकसर खाली होती । माँ किसी सत्संग में जाती, बहने स्कूलो में, और खाट पर पडे–पडे मेरी आँखे दहलिज के पार धीरे–धीरे सरकती धूप को देखती रहती ।[५] इस तरह अपनी बिमारी की वजह से साहनीजी का बाल्यकाल बीमारी का काल भी कहा जा सकता है । जिस तरह क्रिष्न भगवान और बलराम के बिच माँ मेरी है इस बात पर लडाई होती थी उसी तरह हमारे साहनीजी और बलराज के बिच में भी लडाई हुआ करती थी । भीष्मजी जब बडे भाई से झगड्ते तो बलराज अकसर ऐसा कहते थे कि तु मेरा भाई नहीं है, तुझे तो पिताजी धूरे पर से ुठा लाए थे । इसीलिए मैं गोरा हूँ, तू कालदू है, मैं तगडा हूँ, तुं नारियल है, मुझे सन्ध्या के मंत्र याद है, तुझे कुछ भी याद नहीं, इस तरह बहुत ही शरारतों के साथ उनका बचपन बीता है । भीष्मजी को बचपन में ही माता–पिता से सुसंस्कार प्राप्त हुए थे । उनके बारे में लिखते है, 'मेरे बचपन के दिनों में घर के माहौल में कटरता थी बेशक, लेकिन उग्र कट्टरता नहीं थी । पिताजी के कट्टर आर्य समाजी होने से समाज सुधार में गहरी दिलचस्पी रही और माताजी के स्नेहपूर्ण वातावरण में धार्मिक संस्कार उनको मिले ।[६] इस प्रकार साहनीजी का बचपन खुशी, गम और संस्कार के माहौल में बिता था ।

२.१.६ : पारिवारिक परिचय

२.१.६.१ : पिताजी हरबंसलाल साहनी

भीष्म साहनीजी के पिताजी आशावादी थे, पुरूषार्थ में आस्था रखते थे । वे व्यवसाय से जुडे हुए थे । उनके पास व्यवसाय से जुडी हुई एजेंसियाँ थी । यह एजेंसियाँ कपडे के व्यापार की थी । साहनीजी के पिताजी को उर्दू और फारसी भाषा का अच्छा ज्ञान था । उनकी शिक्षा उर्दू

और फारसी भाषा के माध्यम से हुई थी । जिस मुहल्ले में भीष्म साहनीजी का घर था वहा अधिक मात्रा में मुसलमान बसते थे । जिनसे साहनीजी के पिताजी अच्छा व्यवहार रखते थे । पर, घर में अपने परिवार के साथ जब भी वे मुसलमान के विषय पर बात करते थे तो सामान्यत: उनकी निंदा ही करते । घर की चार दिवारो में वह मुसलमानो की हंमेशा निंदा करते । इस विषय में बलराज साहनी पिता के चरित्र को अनबूझा समझकर कहते है; ''मेरे पिताजी के चरित्र में अजीब किस्म के अंतर्विरोध थे । यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इसतरह विचार करने पर संभवता कारण यह रहा होगा कि पिताजी आर्यसमाज के कट्टर कार्यकर्ता थे । उन्होंने प्रसंगवश मुसलमानों के विषय में कुछ कहा हो किन्तु वास्तवमें वे उदार मतवादी और सुसंस्कृत व्यक्ति थे ।''(७)

साहनीजी स्वयं लिखते है, ''पिताजी एक जगह पर अपने मित्र की बेटी के साथ मेरी शादी कर देना चाहते थे, मैं नही माना । पर सीधा विरोध करने की बजाय मैंने पिताजी के ही एक दूसरे मित्र से आग्रह किया कि वह पिताश्री को समझाये पिताजी मान भी गये । (८) इस तरह हरबंसलाल साहनी कट्टर आर्यसमाजी होने के साथ आर्यसमाज द्वारा संचालित स्कूल, अस्पताल, आश्रम और कॉलेज में भी सक्रिय रूप से काम करते थे । साहनीजी ने अपने पारिवारिक जीवन के बारे में लिखा है कि, ''पिताजी ने जिन्दगी गरीबी से शुरू की । वह आशावादी, पुरूषार्थ प्रेमी, आर्य समाजियों में से थे, जो उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण की उपज माने जाते हैं, जिन्हें विश्वास था कि मनुष्य का चरित्र अच्छा हो, वह कर्मशील हो तो अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करता है । ''(९)

२.१.६.२ : माताजी : लक्ष्मी देवी

साहनीजी की माता का नाम लक्ष्मी देवी था । वे धर्मपरायण नारी थी । साथ ही उनके विचार बहुत उदार थे । वह अपने विचारो को व्यक्त करने में कभी संकोच नहीं करती थी । समय आने पर आर्यसमाज और पति की कडी आलोचना करने से कतराती नहीं थी । स्वयं लेखक उनके विषयमें कहते है, ''माँ धार्मिक वृत्ति की थी, पर उनमें कट्टरता नहीं थी । वह मंदिर हो या

गुरूद्वारा, या आर्यसमाज, हर जगह पहुँच जाती थी । उन्हे स्कूल जाने का मौका नहीं मिला था, पर अपनी मेहनत से उन्होंने पढ–लिख लिया था । कभी उर्दू सीखने बैठ जाती, कभी अंग्रेजी''।[१०] साहनीजी की माँ में सादापन था और उस सादेपन में पिता की भाँति दृढ विश्वास ही था। ''उनकी माँ छुपछुपकर पैसे इकट्ठे करती रहती और बच्चो के शौक की चीजे खरीद लेती । ऐसे ही पैसे इकट्ठे करके माँ ने उन्हें ग्रामफोन ला दिया था जिसे देखकर पिताजी ने नाक–मौंह सिकोड किन्तु माँ ने परवाह नही की।''[११] कहा जाता है कि माँ का दुलार अनोखा होता है, उसके स्नेह में कभी परिवर्तन नहीं आता । उसका प्रेम अपनी सभी संतान की और समान होता है । साहनीजी की माँ अपनी तीन बेटीयों के स्वर्गवास के बाद सदा वैराग्यपूर्ण गीत गाया करती थी। जब पिताजी के कान में माँ की वैराग्यपूर्ण आवाज पड जाती तो वे माँ को डाटने लगते तू फिर वैराग्य के गीत ले बैठी है, तुझे कईबार समझाया है बच्चो के कान में खुशी के गीत पड्ने चाहिए ।''माँ चुप हो जाती थी ।'' साहनीजी की माँ का व्यक्तित्व ही साहनीजी पर प्रतिबिंबित हुआ ऐसा कहा जा सकता है । वहीं सादगी, वहीं सादापन.... ! साहनीजी अपनी माँ के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित थे । उन्होंने कुंतो उपन्यासमें अपनी माँ की छवि उभरती है । स्वयं साहनीजी इसबात को स्पष्ट करते हुए कहा है कि, ''माँ का चरित्र बहुत कुछ वैसा ही था जैसा 'झरोखे' और 'कुंतो' में चित्रित हुआ है।''[१२]

२.१.६.३ : बडे भाई : बलराज साहनी

वे स्वभाव से साहसी और आकर्षक व्यक्तित्व के धनी थे । दोनों भाईओमें बहुत अंतर था । बलराज साहनी अंग्रेजी विषय में एम.ए. करने के बाद वे बम्बई आये और फिर बम्बई की फिल्मी दुनियाँ में अपने पैर जमाने का प्रयास किया । वे काफी मेहनत और संघर्ष के बाद अपना स्थान बना सके । दोनों भाईयों में आपस में बडा स्नेह था वे अपने भाई को हंमेशा एक हीरो के रूप में ही देखते थे । उनके व्यक्तित्त्व से प्रभावित होने के कारण उनमें अपने भाई के प्रति ईर्ष्या का भाव भी था और ये सभी भाव–भावनाएँ एक साथ मथती रहती. । इसका पता हमें साहनीजी के कथन से होता है, ''भाई को मिलनेवाली हर चीज में एक प्रकार का नयापन होता है, जब मेरी

बारी आती है, तो वह पहले से जानी पहचानी होती है, उनमें कोई नयापन नहीं होता । भाई जैसे भविष्य की औट में से नईनई चीजे उठाकर ले आता है । '' यहां तक की लोग भी साहनी की तुलना अकसर बडेभाई से करते थे और कहते की, ''इसमें और इसके भाई में किता अन्तर है, जितना नार्थ पोल और साउथ पोल में।''[१३] साहनीजी का मानना था कि भाई बडा शरीफ माना जाता है। भाई का चेहरा दमकता शरीफ आदमियों से मिलता था। ना बदमाशों की छाईया चेहरे पर दिखती थी और ना मेरी आँखो की नीचे जैसी हल्की–हल्की साथे। भीष्मजी यह भी मानते थी कि भाई का चेहरा उनके पवित्र विचारों की बजह से दमकता है।

२.१.६.४ : धर्म पत्नी शीला साहनी

शीलाजी साहनीजी के जीवन में किस तरह आयी इन बातों से भी अजीब दास्तान जुडी हुई है । साहनीजी शीलाजी को शादी के पूर्व जानते थे । भीष्मजी की मैासेरी बहन शीलाजी के साथ पढती थी, और भीष्मजी उन वक्त डी.ए.वी. कॉलेज में अंग्रेजी पढाने आये थे ।

कहा जाता है कि साहनीजी और शीलाजी के वैवाहिक संबंध जुड्ने से आठ वर्ष पूर्व उनके पिता ने भीष्मजी की सगाई अपने मित्र की बेटी से कर दी थी जो पेशावर से बलराज के विवाह में आए थे । उनके पिताजी ने उन्हें सगाई की सूचना ही दी । वे कुछ समय तब कुछ न बोल पाये । उनकी प्रकृति अधिक न कहने की थी । पिताजी ने उन्हें व्यापार सहयोग देने के लिए कहा तो वे बिना किसी तर्क के न चाहते हुए भी व्यापार में जुडे । परंतु इस सगाई के संबंध में उन्होंने असहमति व्यक्त कर दी जब काश्मीर यात्रा के बहाने उस लड्की को उसके भाई भावज के साथ श्रीनगर भेज दिया । उस गोरी सुंदरी लड्की को बहाने से पहलगाम के होटल में ठहराया जहाँ उनकी भेट साहनीजी से हुई। वे बिना कहे होटल से चल दिये। इसबात को लेकर साहनीजी के पिताने सगाई तोड दी। फिरभी साहनीजी ने अपने चयन के साथ समझौता न कर पिताजी से विरोध कर उनको मनाया और उनकी शादी के लिए पिताजीने इजाजत दी साहनीजी की शादी हुई उस वक्त भीष्मजी २८ वर्ष के थे और शीलाजी २० वर्ष की। शीलाजी एम.ए करके आई तब उनको गौान करके लाया गया। शादी से लेकर बँटवारे तक शीलाजी को सास–ससुर की कडी

निगरानी में रहना पडा। अपने दाम्पत्य जीवन से दौनो खुश थे। शीलाजी एक जिम्मेदार औरत की तरह सारा कामकाज सँभालती थी।

जब बँटवारा हुआ उसके बाद शीलाजी रेडिओ पर नौकरी करने लगी थी। घर की सभी विषम परिस्थितियों में शीलाजी ने सहकार दिया। शीलाजी मृदुभाषी, मिलनसार, और व्यवहार कुशल नारी थी। जो किसीभी परिस्थिति में मीठी मुस्कान बनाये रखकर तनाव दूर करती थी। उनको संगीत और चित्रकला में रूची थी। साथ ही साहित्य के प्रति भी लगाव था। पर घर के बँटवारे के बाद उनको नौकरी करने की आवश्यकता पडी वर्ना वे अपनी पहचान संगीत और चित्रकला के क्षेत्र में भी बना सकती थी। शीलाजी हरवक्त साहनीजी की देखभाल करती। उन्हें भीष्मसाहनी की इस बात पर नाज था कि वो किसीभी स्थिति में अपने लेखनकार्य नहीं छोड्ते थे। चाहे कितनी भी आवाज आये या शोर क्युं ना मचे। शीलाजी साहनीजी की तारिफ किया करती और साहनीजी शीलाजी के। जब वे काश्मिर गये तब उनके यहाँ कल्पना का जन्म हुआ और बाद में वरूण का जन्म हुआ । शीलाजी साहनी के लेखन कार्य में भी अपना योगदान देती थी। शीलाजी ने भीष्म साहनी के बारे में साक्षात्कार के वकत कहा है कि, ''भीष्म के खिलाफ कोई शिकायत नहीं है। हाँ शुरू शुरू में कईबार लडाई हो जाती थी, कभी–कभी तो अब भी हो जाती है, तब भीष्म मुझसे कहते थे, कि तुम मुझे लिखकर बताओ कि मेरे अन्दर कौनसे नुक्स है, तब मैं उन्हे ठीक कर लूँगा। मैने दो–ढाई पन्ने का एक लम्बा चिट्ठा तैयार कर दिया। परन्तु धीरे–धीरे मुझे भीष्म के नुकस कम और अपने ज्यादा दिखायी देने लगे।''[१४] इसी तरह भीष्मजी को उनके मित्र शीलाजी के बारे में कहते थे कि, ''भीष्म तुझे 'एक में तीन' जैसी पत्नी मिली है। 'पत्नी, प्रमिका और पाठिका''।[१५] शीलाजी अपने दाम्पत्यजीवन से खुश थी। उन्हें लगता था कि भीष्मजी के रूप में उन्हें अच्छा साथी मिला है। जो शांत स्वभाववाले थे, जिन्हें कभी गुस्सा नहीं आता था। साहनीजी सारा वक्त लेखन में बिताते और शीलाजी उस लेखन की पहली पाठिका बनती थी। शीलाजी पत्नी के सच्चे दायित्व को हरवक्त निभाती रही थी। शीलाजी का हरा–भरा सहयोग ही साहनीजी की प्रगति का कारण कहा जाता है। जैसे उम्र के साथ अनुभव

परिपक्व होता गया वैसे उनका साहित्य निखरता गया। यह साथ शीलाजी ने २–अगस्त–१९९९ दिल्ली में छोड दिया जब शीलाजी का देहांत हुआ।

२.१.६.५ : बेटा वरूण और बेटी कल्पना

भीष्मसाहनी और शीलासाहनी की दो संतानो में बेटा वरूण और बेटी कल्पना है। ''कल्पना का विवाह रोमी से हुआ था। कल्पना ३० वर्षो से रूषी साहित्य से गहन रूप से जुडी है और अध्यापन करती है। उन्होंने ऊँचे सारकी अनेक पुस्तको की रचना भी की है। उनका बेटा मार्तण्ड भी जवान है। जो इंग्लैण्ड के विश्वविख्यात वास्तुकला विद्यालय से सर्वोच्च डिग्री प्राप्त कर चुका है। और साहनीजी का बेटा वरूण जिसकी शादी रोहिणी से हुई है। जो अर्थशास्त्र की विशेषज्ञा है। वरूण ने मास्को में उच्च शिक्षा के बाद १० CCA (Inter University Center for Astronomy and Astrophysics) पुना की संस्था में का किया। वरूण गणना यंत्रो द्वारा चांद–सितारों के हिसाब में लगा है। उसे शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। रोहिणी संगीत में भी रूची रखती है। उसने मराठी भाषा में कहानियाँ भी लिखी है। उनके बेटे का नाम भृगु है। जो अगत्स्य कोलेज में अध्ययन करने के साथ गिटार और तबलावादन में प्रवीण हैं।''[१६]

२.१.७ : शिक्षा–दीक्षा

भीष्मजी के शिक्षा का प्रारंभ स्थल रावलपिण्डी और अपना घर था। हिंदी और संस्कृत की प्रारंभिक शिक्षा घर में प्राप्त करने के बाद वे अपने बडे भाई के साथ ही निकट के एक गुरूकुल में उनको डाला गया। उस वक्त का अनुभव बताते हुए भीष्मजी स्वयं कहते है कि, ''जब गुरूकुल में डेढ–दो साल पढे तब पीली धोती और लाठी के साथ रोज गुरूकुल में जाना था, अष्टाध्यायी के सूत्र कंठस्त करते थे। पर वह और ज्यादा दिन तक नहीं चला। पिताजी को गुरूकुल की शिक्षा पसंद न आयी।''[१७] उसके बाद साहनीजी को आर्यस्कूल में डाला गया। साहनीजी के बडेभाई भी गुरूकुल में पढना नहीं चाहते थे इसीलिए दोनो भाई आर्यस्कूल डी.ए.वी.

में चले आये। वहाँ पर साहनीजी के साथ एक घटना घटी जब साहनीजी दूसरी कक्षा में थे जब मास्तरजीने प्रश्न किये। भीष्मजीने उत्तर दिये किन्तु उन्होंने देखा कि लड्के ने उल्टा पाजामा पहन रखा है, तुरन्त ही उन्होंने कहाँ कि जिस लड्के को पाजामा तक पहनना नहीं आता वह दूसरी में कैसे बैठ सकता है? इस तरह भीष्मजी को दूसरी से उठाकर पहली कक्षा में भेज दिया गया। जब साहनीजी विद्यार्थीकाल में थे तो देश में चारो और स्वतंत्रता आंदोलन हो रहा था। लोग काफी तायनात में जुलूस में जुड रहे थे। उन्होंने कहा है, ''में स्कूल में था, जब भगतसिंह और उनके साथी फाँसी पर झूल गये थे। जितेनदास ने ६२ दिन की भूख हड्ताल के बाद अपनी साँसे छोड दी। इन्हीं दिनों जेल के सींखचो के पीछे से एक कवि की आवाज सुनाई दी;

''हमने जब वादी–ए–मुरबत में कदम रक्खा था,

दूर तक याद–ए–वतन आयी थी समझाने को ।''(१८)

इसतरह काफी उथलपु के वातावरण में मेट्रिकुलेशन और सन् १९३३ में इंटरमीड्यिेट की परीक्षाएँ उतीर्ण की । १९३३ में वे आगे की पढाई के लिए लाहोर चले गये। सन् १९३७ में लाहोर के गवर्नमेन्ट कॉलेज में उन्होने एम.ए की अंग्रेजी की उपाधि प्राप्त की। फिर पंजाब विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि हासल की। पंजाबी मातृभाषा होने के अलावा हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, फारसी और रूसी भाषाओं के भी ज्ञाता थे। पी.एच.डी. करने के निश्चय में साहनीजी ने चंदीगढ के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष इन्द्रनाथ मदान के परामर्श और निर्देशन में 'हिन्दी उपन्यास की नायक की अपधारणा' शीर्षक विषय का चयन करके अपना शोध प्रबन्ध अंग्रेजी भाषा में Concept of the Hero in Hindi Novel शीर्षक पर लिखा था । इस तरह भीष्मजी का शिक्षा–दीक्षा का दौर गुजरा था ।

२.१.८ : मित्रत्व

सभी व्यक्तिओं के जीवन का एक खास पहलू और गहरा रिश्ता मित्रता से जुडा हुआ होता है। जिससे व्यक्ति के व्यक्तित्त्व का पता चलता है। जिसके साथ वर्तन से व्यक्ति के जीवन के खास पहलू को भी जाना जा सकता है। व्यक्ति के जीवन का परिवर्तक साथी मित्र है।

साहनीजी के मित्र ज्यादातर गरीब महोल्लो के लड्के थे। परिवार में भीष्मजी छोटे होने के कारण बडे भाई पर तो रूआब नहीं जमा पाते थे। इसलिए गरीब लड्को पर रूआब डालने की कोशिश भी करते थे। फिरभी साहनीजी का व्यवहार ही ऐसा था कि उनके संपर्क में जो भी आये उनसे मित्रत्व का नाता जोड देते थे। वे स्वयं लिखते है, ''हम उम्र लोगो में जो खुलापन होता है उससे व्यक्ति के विकास में बडी मदद मिलती है। सारा वक्त उनसे प्रभावित होता रहता था और ज्यादा से ज्यादा अन्तर्मुखी होता जा रहा था। शायद उसी सोहबत का यह नतीजा है कि में हर मिलनेवाले को बडा मानने लगता हूँ ।''[१९] यह वृत्ति उनमें जीवनपर्यंत रहीं। हिन्दी के प्रमुख साहित्यकार उनके मित्र रह चुके थे, जिसमें प्रमुखता उनके समकालीन प्रगतिशील लेखक थे।

२.१.९ : शौक

भीष्मजीके सीधे–सादे व्यक्तित्त्व को देखते ही उनके शौक के बारे में पता चल जाता है कि, उनके शौक भी उसीके अनुसार होंगे।''खान–पान के बारे में उनका कोई विशेष आग्रह नहीं होता था। बचपन से उन्हें होकी खेलना, लम्बी सैर करना तैराकी, घुमककडी आदि का विशेष शौक रहा था। साहित्य, इतिहास समाजशास्त्र आदि विषयों की पढाई में विशेष रूचि थी। हॉकी तथा ड्बिेटिंग में दो–दो मैड्ल भी प्राप्त किए थे।''[२०] बचपन से ही साहनीजी को नाटक खेलने का बेहद शौक होने के कारण घर में भी वे परिवारवालों के सामने नाटक किया करते थे। स्कूल में एकबार श्रवणकुमार का नाटक हो रहा था। जिसमें भीष्मजीने श्रवण का रोल अदा किया था। हॉलाकि बचपनमें शरारतों के साथ घर से गायब रहना, कोयले को पसकर श्याही बनाने और गुल्ली–डंडा खेलने में रूचि थी। उम्र के साथ सबमें परिवर्तन का क्रम निश्चित है। कॉलेज के दिनो में वाद–विवाद प्रतियोगिता में हिस्सा लेने जैसे शौक भी आते गये। बाद में यात्रा करना, चित्र बनाना और कला प्रदर्शनियाँ देखने जैसे शौक लग गये। घरेलू कामकाज के अलावा मूर्तिकला और अध्यापन में वे विशेष रूचि रखते थे। साहनीजी की अभिरूचि लेखन के साथ–साथ अभिनय में भी रही थी। विद्यार्थी जीवन से पाठशाला और महाविद्यालय में अभिनय करते रहें। अभिनय के प्रति विशेष रूचि अपने बडेभाई के कारण ही पेदा हुई थी। क्योंकि बलराज साहनी को

भी नाटको में अभिनय करने का शौक था। यहीं शौक का परिणाम तब दिखा जब उन्हीं के उपन्यास पर दूरदर्शन पर धारावाहिक बनकर प्रसारित हुई और अपनी अभिनय कला के दर्शन सफल अभिनेता के रूप में दिखे।

२.१.१० : व्यवसाय / नौकरी

कोई भी आदमी हो उसके पढाई का ध्येय नौकरी या व्यवसाय में जुड्ना ही होता है। हमारे साहित्यकार साहनी का जीवन संघर्ष भी आम आदमी की कतार में ही रखा जा सकता है। कितनी कठिनाई आदमी को मिलती है और अंतमें वह सफलता की ऊँचाई को छुता है इसका जीवंत उदाहरण हमारे भीष्मजी है। एम.ए. पास करने के पश्चात भीष्मजी व्यापार में प्रवृत हुए क्योंकि उनके सामने सबसे बड्ा प्रश्न नौकरी का था। नौकरी आसानी से नहीं मिलने पर वे कपडे के व्यापार में जुड गये। उनका मन व्यापार में नहीं लगता था फिरभी ३ साल तक व्यापार करते रहे। तीन साल बाद व्यापार छोड्कर शान्तिनिकेतन गये थे। और निश्चय किया कि भाई के मुंबई चले जाने के बाद पिताजी के साथ रहेंगे और व्यापार करेंगे। वे व्यापार के साथ स्थानीय कॉलेज में आनरेरि तौर पर पढाते भी थे। साथ ही नाटक खेलने लगे। व्यापार का नापसंदी शौक १० साल तक उनके पाले पड्ा। उसी वक्त उन्होंने थोड्ा बहुत काम कॉंग्रेस में भी करने लगे। देश के बँटवारे के वक्त उन्होंने अपनी आजादी को महसूस किया पर उनके परिवार पर बहुत बड्ा संकट आया। ऐसे समय में उन्होने कुछ दिनो तक पत्रकारिता करते हुए समय निकाला। इसी समय उन्होंने 'इप्टा' नाटक मंड्ली में भी काम किया। देश–विभाजन पश्चात पंजाब को दो टुकड्ो में बाँटा गया तब भीष्मजी का सारा परिवार बम्बई बलराज साहनी के पास रहने गया। इन कठिनाईयों से भरे दिनो का वर्णन करते हुए बलराज साहनी लिखते है, ''देश के बँटवारे के बाद अपना सबकुछ खोकर पिताजी दर–ब–दर हुए हिल रहे थे। किसी एक जगह उनका दिल नहीं लगता था। परिवार के सभी लोग मेरे यहाँ आये हुए थे। मेरे छोटे भाई भीष्म और उनकी पत्नी शीला, जयंत देसाइर की एक फिल्म की डबिंग में हिस्सा लेकर घर का गुजारा चलाने में सहायक हो रहे थे।''[२१] जब भीष्मजी को बम्बई में रहने पर कोई नौकरी नहीं मिली वहाँ वे लगातार

नैाकरी के प्रयास में फिरते रहे। बडी मिन्नतों के बाद वे अंबाा के हक कॉलेज में अध्यापन कार्य में जुडे। वहाँ पर भी अधिक समय नहीं टीक पाये। फिर खालसा कॉलेज अमृतसर में अध्यापन कार्य का सैाभाग्य प्राप्त किया। वहाँ पर भी अधिक दिन तक किस्मत ने साथ नहीं दया। कुछ समय बाद नैाकरी के लिए दैाड–धूप करने लगे इसी संदर्भ में साहनीजी कहते है, ''यहाँ आरजी नैाकरियाँ निकलती रहती थी कहीं दो साल के लिए, कहीं तीन साल के लिए। पहली आरजी नैाकरी मिली श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स में, दूसरी मिली हिन्दू कॉलेज में और उसके बाद तीसरी, पर पक्की नैाकरी मिल गई मिर्जा महमूद बेग के ल्हिी कॉलेज में अंग्रेजी साहित्य के प्राध्यापक पद पर नियुक्त हुए। उसी कॉलेज में रिटायर्ड होने तक अध्यापन करने के साथ लेखनकार्य में भी जुटे रहें। दिल्ली कॉलेज में अवकाश प्राप्त करने के बाद वे छुट्टियों में शिमला में 'इंड्यिन इन्स्टीट्यूट एण्ड अड्व्हांस स्टीडी' में राष्टपति निवास में कार्यरत रहे। बाकी वक्त साहनीजी दिल्ली में रहते हुए साहित्य सृजन करते रहे। इस प्रकार भीष्मजीने संघर्षो में जूझते हुए श्रेष्ठ साहित्यकार की नामना हाँसिल की थी।

२.१.११ : आजीविका और जीवनसंघर्ष

किसीभी क्षेत्र में नाम कमाना कोई आसान काम नहीं है। कहा जाता है कि, व्यक्ति का जीवन संघर्षो से भरा होता है। पुरानी कहावत के अनुसार किसीभी महान व्यक्ति का भूतकाल देखा जाये तो वह संघर्ष और कठिनाईयां से ही भरा दिखता है। भीष्मजी का जीवन अनेक संघर्षभरे रास्तों से गुझर चुका हैं। बचपन में किसीभी वस्तु के लिए संघर्ष, बीमारी से संघर्ष, स्नातकोत्तर तक की पढाई के बाद नैाकरी के लिए संघर्ष, पिताजी के व्यवसाय में संघर्ष और अंत में देशविभाजन की घटना के वकत शरणार्थियों की तरह लाचार भटकने का संघर्ष। बम्बई में नैाकरी की तलाश में संघर्ष, परिवार का गुजारा करने के चककर में फिल्मी दुनिया में जाने पर भी निराशाभरा संघर्ष, बम्बई छोड्कर अमृतसर कॉलेज की सेवा के वक्त संघर्ष, दिल्ली की जाकिर हुसेन कॉलेज में रिटायरमेंट तक के कटु अनुभव के साथ का संघर्ष, कम्युनिस्ट कार्यकर्ता की भूमिका के वक्त संघर्ष।

सृजनशील रचनाकार अपने जीवन संघर्षो से ही अपने जीवन को इस कदर नीखार पाता है कि उसकी मनस्थिति उसकी लेखनी के माध्यम से व्यक्त होती है । निम्नलिखित पंक्तियों से एक रचनाकार की मनस्थिति ही व्यक्त हुई है, ''भीड का अंग बनने का विचार मात्र ही घातक और असह्य है। फिर बडी–बडी प्रगतिशील घोषणाओं से क्या लाभ ? जब भी में अपने इर्द–गिर्द देखता हूँ कि मेरी सभी प्रगतिशील मित्र लगभग वैसे–वैसे ही हैं। वै हर समय आम–आदमी की चर्चा तो करते है किन्तु वास्तव में उनकी सारी शक्ति आम आदमी से ऊपर उठने में ही लग जाती है। कुछ बनने और यश, लिप्सा में ही। मैं सौचता हूँ हमारे जीवन में यही बुनियादी विसंगति है।''[२२] साहनीजी ने जीवन में बहोत कुछ सहा है। साहनीजी जब विषम परिस्थिति में ये तब उनको कई काम एक साथ करने पड्ते थे। वे स्वयं कहते है कि, ''इस तरह आजादी से पहले में चार–चार काम एक साथ कर रहा था । व्यापार, कॉलेज, नाटक और थोडा–थोडा लेखन कार्य । साथ ही काँग्रेस में भी सक्रिय रूप से काम किया था । दिल में उत्कृष्ट इच्छाएँ तो उठती थी पर अपनी परिस्थिती के घेरे में हीं उनकी पूर्ति कर पाने की चेष्टा करता रहता था ।''(२३)

२.१.१२ : स्वभावगत् विशेषताएँ :

२.१.१२.१ : सादगी

साहनीजी के रहन–सहन और सलीके में भी एक जिम्मेदार लेखक की सादगी तथा गम्भीरता थी । उनका स्वभाव बेहद नम्र था । छोटे से छोटे व्यक्ति एवम् संस्थाओ की उन्नति का वे खयाल रखते थे । उनकी नम्रता के सामने कोई भी अहंग्रस्त व्यक्ति अपनी हीनता से संकुचित हुए बिना नहीं रह सकता । उनकी गहन विद्वता एवं अपूर्व प्रतिभा से कोई भी शिक्षा–प्रेमी तथा ज्ञानवान् प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था । वे व्यापक सहानुभूति के भंडार थे । उनके व्यक्तित्त्व का मानवीय पक्ष मजबूत था । भारत की दु:खी, अनपढ और क्रमिक जनता पर उन्हें अधिक स्नेह था वे कदी उनको घृणा से नहीं देखते थे अत: अकारण गुस्से में रहनेवाले साथी उन्हें गांधीवादी कहते थे वे उतने ठंडे आदमी थे । उनमें ना बनावट करने की आदत थी ना ऊँचा

जीवन जीने की ख्वाईश। उनका 'सादा जीवन और उच्च विचार' आदर्श थे । साहनीजी जैसे बाहर थे वैसे ही अंदर थे ।

२.१.१२.२ : सहनशील, भावुक / संवेदनशील :

भीष्मजी में विशेषता के गुणों का भंडार फूट–फूटकर भरा था । उनका व्यक्तित्त्व विवादो से सदा अलिप्त है । उनकी स्वभावगत विशेषता में भावुकता और संवेदनशीलता इसतरह भरी हुई थी कि उन्हे अपने अतित की यादें रूला देने पर मजबूर कर देती है । उन्होंने विभाजन की त्रासदी संवेदनशीलता की झलक दिखती है । साहनीजी के साहित्य के केन्द्र बिन्दु समान मध्यमवर्ग में उनकी संवेदनशीलता के दर्शन होते है ।

२.१.१२.३ : आतिथ्यशीलता

साहनीजी स्वभावत: ही आतिथ्यशील थे । जबभी उनसे कोई मिलने चला आता था वे कोई भी काम कर रहे हो, उसे छोड्कर अतिथि स्वागत के लिए उपस्थित हो जाते थे । किसी के लिए तो खाना छोड्कर भी उठ जाते थे । इतना ही नही प्यार से उससे मिलकर उसे खुश कर देते थे । वे वातचीत में गंभीर माहौल को तौड्कर हल्का फुल्का माहौल भी बता देते थे अर्थात् वे खुशमिजाज किस्म के इन्सान थे ।''[२४]

२.१.१२.४ : बातचीत में सहजता

महान व्यक्ति की महानता के लक्षण यहीं होते है कि उसे किसी भी बात का गर्व न हो अभिमान न हो । वैसे ही हमारे साहनीजी थे । जिन्हे इनसे बडे साहित्यकार होने पर भी गर्व मात्र नहीं था । इसीकारण आम से आम आदमी भी इतने मिलते वक्त कतराता नहीं था । मोहन राकेशजी ने सन् १९६४ में उनके बारे में लिखा है, ''भीष्मजी के चेहरे और बातचीत में आज भी वह सहजता है जो २२–२४ की उम्र के बाद नहीं रहता । विश्वास नहीं होता कि, यह आदमी अगले साल पचास का हो जायेगा.... भीष्मजी, ने दोस्तों पर दबे–दबे रायजीनी भी की पर

एहतितात बरसते हुए की उसका गलत इस्तेमाल न हो । साथ ही भलमनसाहत का तकाजा कायम रखते हुए ।''[२५]

२.१.१२.५ : विनम्रता

भीष्मजी के भीतर बहुत से असाधारण गुण थे जो हमे उनके व्यक्तित्त्व की पहचान कराके प्रभावित करने पर मजबूर कर देते थे । शत्रुओं के भीतर सोये हुए मनुष्य को कुरेदनेवाला मानवीय गुण उनमें था । कमलाप्रसाद के शब्दो में कहना चाहें तो कह सकते है कि, ''किसी कम्युनिस्ट के संवेदनशील आचरण की शिक्षा भीष्मजी से लेनी चाहिए ।''[२६]

२.१.१२.६ : संकोची

साहनीजी में नम्रता के साथ विनम्र स्वभाव और संकोची गुण भी था । जो कोई भी उनसे साक्षात्कार के लिए जाता था वह चाहे जितना भी बडा हो या छोटा परंतु साहनीजी उससे सकुचा जाते थे । अपनी राय भी वे नपेतुले शब्दों में देते थे । परंतु उनकी सोच और बयान की साफगोई और खुलापन साफ दृष्टिगोचर हो जाता है । उनका यह शिष्ट व्यवहार, उनके स्वभाव की शालीनता, कर्मठता के लिए उन्हे कोई प्रयास नहीं करने पडते थे । उनके व्यक्तित्त्व के कारण उनके विरोधक की संख्या भी अल्प थी । उनके मितभाषी स्वभाव से विपरित बात यह थी कि घर में उनका व्यवहार एकदम उलटा था । घर में वे खूब बाते करते थे । घर में हर वक्त दोस्ती का माहौल रहता था । वे हर मसले पर अपने विचारों को सिर्फ प्रस्तुत ही करते थे ना कभी थोंपने का प्रयास ।

२.१.१२.७ : निरंतर कार्यशील

जीवन पर्यंत साहनीजी कार्यरत रहे थे । राजकुमार राकेशजी को दिये गये साक्षात्कार में वे इस संदर्भ में कहते है, ''दरअसल अपनी–अपनी जिंदगी का एक ढर्रा–सा बन जाता है । मैं कहीं रफतार तो जाता नहीं । १९८० में कॉलेज में पढना खत्म हो गया था । (हँसकर) तो घर

पर ही रहा, लेकिन यह ठिक है कि, मैं कभी खाली नहीं बैठता । बैठ ही नहीं सकता । काम करता रहता हूँ और अपनी साम्थ्यर्नुसार लिखता रहता हूँ मैने यह महसूस किया है कि जिंदा रह पाने के लिए काम करना नितांत आवश्यक हो जाता है । स्वस्थ रह पाने के लिए भी । अपनी जीवन सृष्टि बनाए रखने के लिए यदि मैं खाली बैठ जाऊँ, तो यह मेरे स्वास्थ्य, मेरे भविष्य व मेरे जीवन के लिए हानिकारक होगा । जहाँ तक भी संभव हो व्यक्ति को सक्रिय ही रहना चाहिए, हाँलाँकि जीवन की सारी बातें एक व्यक्ति के हाथ में नहीं होती । अब लिखने से हटकर मैं करूगा क्या ? पहले प्रेस के सेक्रेटरी के तौर पर इधर–उधर जाता था । वैसा काम अब संभव नहीं । अब संभावना भी नहीं बची है । फिर भी सामाजिक गतिविधियों से जहनी दौर पर जुडे रहना चाहता हूँ ।''[२७]

२.१.१२.८ : विद्रोही

सहनशील, भावुक और शांत लगनेवाले साहनीजी वक्त के अनुसार विद्रोह भी कर चुके है । जब वे कपडे के व्यापार में जुडे हुए थे तब व्यापार में आर्डर बुक करवाने के लिए रिश्वत देने से उन्होने इन्कार किया था । वे स्वयं कहते है, ''मैं भोचक्का सा उनके चेहरे की ओर देखने लगा । यह काम तो मैं हरगिज करने के लिए तैयार नहीं था । मुनाफे पर इतने दिन नहीं किया तो क्या अब रिश्वत देने जाऊँगा ? और फिर मेरा नाम लिस्ट पर है, वह इन्कार ही कैसे कर सकता है । ''[२८] एकबार किये गये इन्कार पर वे हमेशा ही दृढ रहे शायद इसीकारण व्यापार में उन्हें असफल होना पडा । जब अंग्रेजी हकूमत का अन्याय चारो और फैला था उसी वक्त भी उन्होंने अन्याय के विरूद्ध भी कईबार विद्रोह किया था । भीष्मजी बँटवारे के बाद पंजाब कॉलेज मे शिक्षक बने । वहाँ भी शिक्षकों की यूनियन बनाकर प्रदेशभर में एक दिन की सांकेतिक हड्ताल की थी ।

२.१.१२.९ : रहन–सहन

साहनीजी के चेहरे की भोली मुसकान ही उनके सीधे सादे व्यक्तित्त्व की और इशारा करती है । साहनीजी के रहन–सहन को बचा करती है । अपने विषयमें उन्होने कहा भी है कि बचपन में माँ के हाथ के सिले कपडे वे पहनते रहे । माता–पिता के संस्कारशील जीवन और स्वभाव के कारण भीष्मजी सारे जीवन बडे सीधे–सादे कपडे पहनते रहे । देशविभाजन की घटना के बाद तो उन्होंने खादी का कुर्ता और पैजामा ही पहना और जीवन के अंत तक उनकी यही पोशाक रहीं । रहन–सहन में कहीं भी कृत्रिमता नहीं दिखती थी । जब कोई उनसे मिलने आता तो वह तुरंत मिलने जाते । अपने मिलनेवालो के लिए वे व्यस्त होते हुए भी वक्त निकालते । जब बातचीत का सिलसिला आरंभ होता तो वे हर प्रश्न का उत्तर और शंका का समाधान बडी सहजता से कर देते । सादगी से परिपूर्ण उनके रहन–सहन का उनके जीवन में इतना असर पडा कि वे सदा नम्रता से ही व्यवहार करते थे । उनकी बातचीत का खुलापन उनके रहन–सहन का प्रतीक था ।

२.१.१२.१० : आचार–विचार

माना जाता है कि जिस पर्यावरण में संस्कार दिये जाते है, वैसे ही उनके आचार–विचार होते है । कहावत के अनुसार भी कह सकते है कि, ''संगत वैसी सोबत''। इस उक्ति को ओर चरितार्थ करने के लिए हमे साहनीजी के आचार – विचार को ही माध्यम में रख लेना चाहिए । साहनीजी अपने आचार में जितने सहज, सरल और मुक्त थे उतने विचारो में भी थे । उनके आचार की अभिव्यक्ति उनके विचारो में लेखन के माध्यम से साफ दिखती है । साहित्य और अभिनय दोनो के साथ जुडे विशिष्ट प्रकार का संतुलन सदा ही रहा है । ये रचनाकार का समिष्ट अंग है । साहनीजी पर उनके माता–पिता के संस्कार का उच्च प्रभाव भी दिखाई देता था । क्योंकि कर्मशील व्यक्ति ही अपने भाग्य का स्वयं निर्माता बनता है । उनके पिताजी का यह वाक्य उन्हें जीवनभर याद रहा, ''मुठ्ठी भर मिट्टी भी उठानी हो तो बडे ढेर से उठाना ।''[२९] साहनीजी की माँ ने उनसे पंजाबी में कहा था, ''थोडा लद्द सवेले आ ।'' जिसका अर्थ होता है

गधे पर इतना सामान लादो कि उसे बेचकर जल्दी घर लौट सके । ''[३०] इस प्रकार साहनीजी के माता–पिता के उच्च शिक्षा–दीक्षा परख वाक्यों को भीष्मजीने अपने जीवन में इसतरह समा लिये की उसीमें ही वास्तविकता दिखाई दी थी ।

२.१.१२.११ : उच्च मनोभाव

भीष्मजी के साहित्यिक विचारों की झलक उनके मनोभावो को व्यक्त करती है । वैसे उन्होने साक्षात्कार के वक्त स्वयं अपने मनोभाव को व्यक्त करते है । उनका मनोबल इतना मक्कम था कि जिस वक्त उनके बडे भाई बलराज की मृत्यु हो गई उस वक्त भी उनको दृढ विश्वास था कि, ''कलाकार कभी मरता नहीं ।'' अपने बडेभाई बलराज की मृत्यु पर जो मनोभाव व्यक्त किए वह दृष्टव्य है, ''एक दिन बलराज मर गया। एक बडा हुजूम घर के भीतर और बाहर जमा हो गया । मित्रो, सम्बन्धियों और महान हस्तियों के अतिरिक्त मछुआरो, होटल के बैरो, स्थानीय गरीब–गुरबा की अपार भीड यहाँ तक कि गलियों के भिखमंग भी, उसका घर सार्वजनिक स्थान बन गया था । मैं यह जानकर गदगद हो गया था, जब मुझे बताया गया कि मछुआरे उसकी मृत्यु की खबर सुनकर कासोवा से चलकर आये है और रीतभर शव के पास बैठकर विलाप करते रहे । होटल के कृतज्ञ वैरे जिनकी लम्बी हडताल के दौरान बलराज ने उनकी आर्थिक सहायता की थी । दलित वर्ग के प्रत्येक व्यक्ति के साथ बलराज की किसी न किसी रूप में व्यक्तिगत जान–पहचान थी और वे उसे मन से चाहते थे ।''[३१] इन विचारों और कठिन प्रसंग के माध्यम से साहनीजी के उच्च मनोभावों के दर्शन होते है । उनका लेखन का सारा सामर्थ्य आम आदमी को ऊँचा उठाना ही था । उनकी सभी रचनानाएँ उनके मनोभावो को व्यक्त करती है । कहानी साहित्य के विषय में उनके मनोभाव व्यक्त करते वे स्वयं कहते है कि, ''आज की कहानी काफी विकसित हो गई है । अब उनकी सार्थक्त सिर्फ यह नहीं है कि उसमें कथारस है । एक कला माध्यम की हैसियत से यह भी तो जरूरी है कि वह समकालीन जीवन में लेखन के अलावा बहुत समस्याएँ भी थी पर उन परिस्थिति में अनेक विशिष्ट मनोभाव उनके साथी बनकर जुडे थे ।

२.१.१२.१२ : रूचियाँ

जिंदादिल व्यक्तित्त्व ही भीष्मजी की अनोखी विशेषता थी । वैविधमुखी प्रतिभा के धनी सर्जक की रूचियों का दायरा भी अनोखा था । दिनेश शर्मा को दिए गए साक्षात्कार में वे अपनी प्रारंभिक रूचियों के संबंध में कहते है, ''लड्कपन में मनुष्य की बीसियों चीजो में रूचि होती है । एकबार मूर्तिकला में भी गहरी रूचि पनपने लगी थी । श्रीनगर में एक विदेशी महिला बहुत बढियाँ बुत बनाती थी । मैं उनके पास जा पहुँचा । उनका सिखाने का ढंग भी बहुत बढियाँ था । मेरा शौक बढने लगा, लेकिन उनकी फीस बहुत ज्यादा थी । मैं दो–ढाई महीने से ज्यादा नहीं सीख पाया।''[३३] साथ ही साहनीजी को तैराकी, धुमक्कडी और लम्बी सैर का भी शौक रहा साथ ही इतिहास के प्रति भी गहरी रूचि थी । इसके अतिरिक्त साहित्य और समाजशास्त्र में भी रूची रही थे।

२.१.१२.१३ : वैचारिक प्रभाव

सभी व्यक्ति के जीवन में किसी महान व्यक्ति का प्रभाव होता ही है । जिनमें हमारे महात्मा गाँधीजी, स्वामीविवेकानंदजी, डॉ. भीमराव आम्बेड्कर जैसे व्यक्तियों के नाम भी शामिल है तो उनकी हार में हमारे साहनीजी का नाम किस तरह अलग किया जा सके ? जहा तक साहित्यसृजन की बात है वह वैचारिक प्रभाव के बिना संभव नहीं हैं । सफल और सजाग रचनाकार अपने युग के विचारों की जितनी अनुभूति करता है उतना ही ज्यादा अपने साहित्यलेखन में जान डाल सकता है । अपने मानसपटल पर प्रतिबिम्बित छाप को वह अपने विचारों में ढालकर प्रस्तुत करता है । लेखक अपनी युगीन विचारधारा और स्वयं के अनुभव से बहुत कुछ बया करता है और यही सहनवृत्ति ही उसे कई बाते सिखा जाती है । इस संदर्भ में स्वयं साहनीजी का कथन दृष्टव्य है, ''हर चोट का दर्द मैने बहुत बाद में ही महसूस किया है, उसका अर्थ और महत्त्व भी बहुत बाद में ही समझ पाया हूँ । वह भी देखता हूँ कि जिंदगी में कई बार हल्के से झटके मन पर गहरा असर छोड गये है जबकि बडी–बडी मुसीबते कही कोई खरोंच

तक नहीं छोड गये है जबकि बडी–बडी मुसीबतें कहीं कोई खरोंच तक नहीं छोड पाई है, या शायद मुझे ऐसा लगता है, अतीत के गुंझलो में से किसी सूत्र को पकड पाऊँ बडा कठिन काम है।''[३४] जीवन में कई संस्कार बचपन से ही ग्रहण हो जाती है । वैसे ही संस्कार के प्रभाव साहनीजी पर पडे । माताजी की आध्यात्मिक दीक्षा और पिताजी के आर्यसमाजी विचारों से घर में समाज–सुधार की चर्चा चलती रहती थी । वैचारिक स्तर पर प्रगतिशील विचारधारा का साहनीजी पर गहरा प्रभाव पडा । उनके प्रारंभिक साहित्यिक जीवन में भीष्मजी माकर्सवादी विचारधारा और चिंतन से तो प्रभावित हुए ही साथ ही समाजवादी विचारधारा भी उन्हें जीवन के अंत तक प्रभावित करती रही । उनकी विचारधारा के प्रभाव उनकी लेखनी में भी दिखते थे । भारतीय दर्शन और चिंतन का भी प्रभाव कहीं–कहीं उनकी कहानियो पर स्पष्ट लक्षित होता है । साथ ही पूर्ववर्ती कहानीकारों और उनके विचारों का प्रभाव विशेष रूप से भीष्मजी की कहानियों में दिखाई देता है । साहनीजी के प्रिय रचना में प्रेमचंद की गोदान ही थी । जिसे उन्होने बार–बार पढा । प्रेमचंद के बाद उनको जैनेंद्र और अज्ञेय के साहित्य ने प्रभावित किया था । नई कहानियों से भी वे बहुत प्रभावित हुए जिनमें मोहन राकेश की 'मलबे का मालिक', कमलेश्वर की 'राजा निरबंसिया', 'शेखर जोशी', मार्कन्डेय तथा राजेन्द्रयादव की रचना के विचार उनको प्रभावित करने में कामयाब हुए थे । भारतीय कथाकारो के साथ ही विदेशी कथाकारों का भी उन पर अच्छा प्रभाव पडा हुआ था । जिनमें अंग्रेजी भाषा के कथाकारों में कैथरिन मेन्सफील्ड, फ्रान्सिसी भाषा के लेखक मैापासां तथा रूसी भाषा के लेखक गोर्की तथा टालस्टोय से भी बहुत अधिक प्रभावित हुए थे । इन सभी बातों से हम जान सकते है कि भीष्मजी एक प्रसिद्ध रचनाकार हैं जो कुछ आदर्श के साथ जीये हैं। जिनके प्रति उनके विचार जुके उन सारी बातों का पालन भी उन्होंने किया । मधुरेश की बात से कहा गया है कि, ''सोद्देश्य रचना के विकास की जो सहज दिशाएँ होती है उन्हें भीष्मजी की कहानियों के संदर्भ में आसानी से समझा जा सकता है।''[३४] इस प्रकार प्रभावित विचारों से उन्होने आदर्शो के साथ जीवन व्यतित किया था ।

२.१.१३ : प्रेरणा स्थल और सृजन भूमिका

प्रेरणा में इतनी ताकत है कि वह आदमी को जमीन से आसमान छूने का हौंसला देता है। जीवन में कई मोड ऐसे आते है कि जिनकी असर साहित्य की प्रेरणा भी बन जाती है। साहित्यकार के साहित्यिक मानस में जब प्रेरणाबिंदुओ का आगमन होता है तो उन प्रेरणाओं के माध्यम वे विचारों की रचना में ढालते है । उनसे जब यह पूछा गया कि, 'क्या कोई ऐसे प्रेरणाबिंदु या व्यक्ति है जिनसे आपको साहित्य रचना की प्रेरणा हुई हो ?' इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हुए यह कहा कि उनकी साहित्य रचना की प्रेरणा में अनेक व्यक्तियों का हाथ हैं । प्रथम वे अपने अंग्रेजी प्राध्यापक से बहुत अधिक प्रभावित हुए । इस विषय में स्वयं वे कहते है कि, ''मेरे अंग्रेजी के अध्यापक जसवंत राय बडे सुंदर व्यक्तित्त्व के स्वामी थे । साहित्य में उनकी विशेष रूचि थी । अंग्रेजी कविता पढाते तो एक अद्‌भूत संसार आँखों के सामने खुलता था । उनसे बडी प्रेरणा मिली ।''[३५] साहनीजी के साहित्य के प्रेरणा स्त्रोत में उनकी परिवार की भी अहेम भूमिका थी । साहनीजी के परिवारके विभिन्न सदस्य ऐसे थे जिन्होने साहित्य में लेखनकार्य किया था । जिनमें उनके बडेभाई बलराज साहनी को साहित्य प्रारंभ से रूचि थी । उन्होंने अंग्रेजी, हिन्दी और पंजाबी भाषा में साहित्य सृजन किया । बडेभाई से प्रभावित रहे इसबात का उल्लेख वे स्वयं इस बात से करते है कि, ''अपने बडेभाई बलराज साहनीजी का प्रभाव भी मुझ पर पडा । उनके व्यक्तित्त्व का भी और उनकी साहित्यिक रूचियों का भी । उन्हीं के साथ बचपन से ही नाटक आदि खेलता रहा । अपनी दो फुफेरी बहनों के साहित्य से भी वे प्रेरित हुए हैं । उनकी बडी फुफेरी बहन 'सत्यवली मल्लिक' जानी–मानी कहानीकार तो, दूसरी छोटी फूफेरी बहन पुरूषार्थवती । जो छोटी उम्र में संसार को छोड्कर चली गयी । पर उसने जो कविताएँ लिखी थी वो थोडी मर्मस्पर्शी थी । साहनीजी उससे भी प्रभावित हुए । पुरूषार्थवती के पति श्री चंद्रगुप्त विद्यालंकार अपने समय के खयाति प्राप्त लेखक रहे है ।''[३६] इस प्रकार उनके जीवन विभिन्न व्यक्तिओं के हस्तक्षेप इसप्रकार हुए जिनसे वे कुछ–न–कुछ सिखते ही आगे चले गयें ।

वैसे ही साहनीजी के व्यक्तित्त्व के विकास के सृजन भूमिका के व्यक्तित्त्व के विकास में अगर अनुकूल परिवेश की आवश्यकता है तो उसकी सर्जनात्मकता और साहित्य में भी अनुकूल परिवेश अत्यंत महत्त्व का है । साहनीजी कोई आकस्मिक रचनाकार नहीं बने । उनके पीछे विभिन्न स्थितियों और संदर्भ की प्रेरणा है । कला के बारे में यह माना जाता है कि वह जन्मजात और नैसर्गिक होती है । यदि कला का अनुकूल परिवेश मिल जाए तो वह उत्कृष्ठ रूप धारण कर लेती है । यह बात निर्विवाद रूप में सत्य मानी जाती है कि कला के बीज जन्मजात होते है पर वह बीज तभी अंकुरित होते है जब उसे परिपूर्ण परिवेश मिलें । साहनीजी को हम इस दृष्टि से जानने का प्रयास करे तो उनका पढाई का शौक बचपन से ही था । बचपन में ही प्रेमचंद और सुदर्शन उनके प्रिय लेखक थे । उनके पिता को भी शेरो शायरी में अभिरूचि थी । उनके पास मेहर साहब का कलाम था जिसमें वे बहुत सी नज्में बालक भीष्म को सुनाया करते थे । इससे अतिरिक्त शेरो–शायरी के शेर भी उनके पिता उन्हे सुनाया करते थे । जिससे बाल्यकाल से ही उर्दू साहित्य के प्रति उनकी रूचि उत्पन्न हो गई थी । बाल्यकाल से ही साहनीजी पंचतंत्र और हितोपदेश की कहानियाँ स्वयं पढ चुके थे । बहुत सारी कहानियाँ इसी काल में अपनी माँ और पिताजी से भी सुनी थी । बचपन से ही घर पर हिन्दी और संस्कृत के शिक्षक पढाने आया करते थे । उर्दू की शिक्षा विद्यालय में पाई । उनके भाई, बुआजी की बेटी, जीजा आदि की और से लेखन के प्रति लगाव हो चुका था । उनके पिताजी की यह बात सुनकर भी वे चिंतित हो गये थे कि उन्होंने विसवी परीक्षा देने के बाद एक 'नावल' लिखा था । इन सभी परिवेश ने उनके जीवन में सृजन भूमिका निभायी थी ।

२.१.१४ : पुरस्कार एवं सन्मान

हमारे प्रिय साहनीजी को कई सन्मान और पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया था । बचपन में ही तेजस्वीता दिखाना आरंभ कर दिया था। ''जब साहनीजी आठवी जमात् में जिले में चौथे नम्बर पर आये थे तब उन्हे मैड्ल मिला था । जब उनके नगर में साल में एकबार घोडो की मण्डी लगती थी तब उनमें भी अच्छे पले हुए घोडो को दिए जानेवाले पुरस्कार के समारोह में साहनीजी

ने मैड्ल पाया था । उन्होंने दो–एक मैड्ल हॉकि में, दो–एक ड्बिेटिंग में जाते थे ।''[३७] साहित्यकार के रूप में बात करें तो जिस साहित्य को पाठको के द्वारा जो स्वीकृत किया गया उनमें भी साहनीजी को सम्मानों से तौला गया था । यहीं सम्मान आदमी की सफलता का प्रतिबिंब है ।

साहनीजी की सबसे प्रसिद्ध रचनाएँ और श्रेष्ठ साहित्यकार के दर्जे ने उन्हें सम्मान की सीढी तक पहुँचाया जिसकी विस्तृत जानकारी निम्मलिखित हैं ।

१) १९७५– तमस उपन्यास – साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला ।

२) १९७५– 'शिरोमणि लेखक' का पुरस्कार – पंजाब सरकार के भाषा विभाग ने दिया।

३) १९८०– 'लोट्स' पुरस्कार – एक्रो एशियायी संघ की ओर से मिला ।

४) १९७९–८० – साहित्य कला परिषद द्वारा दिल्ली प्रदेश ने पुरस्कृत किया ।

५) १९८३ – 'सोवियत लॅण्ड नेहरू' पुरस्कार से नवाजा गया ।

६) १९८३ – उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 'प्रेमचंद' नामक पुरस्कार से पुरस्कृत किया।

७) १९८५– 'बसंती उपन्यास' के लिए उत्तर प्रदेश के हिन्दी संस्थान ने सम्मानित किया ।

८) १९९०– 'मैयादास की माडी' पर हिन्दी – उर्दू साहित्य पुरस्कार लखनऊँ द्वारा हासिल किया था । इसी कृति के लिए 'हिन्दी साहित्य अकादमी' पुरस्कार से भी अलंकृत किया गया ।

९) १९९७ – भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' से विभूषित किया ।

१०) २००२ – 'संगीत नाटक अकादमी' की ओर से नाट्य लेखन पर पुरस्कार एवं 'साहित्य अकादमी' की ओर से फेलोशिप भी मिली थी ।

११) २००२– 'सर सय्यद राष्ट्रीय पुरस्कार' सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार के लिए राजधानी दिल्ली से प्रदान किया गया था ।

साथ ही नाटक संघ और शलाका पुरस्कार से भी साहनीजी को सम्मानित किया गया था। उनकी श्रेष्ठ कृतियों में 'हानूश', 'कबीरा खड़ा बाजार में' तथा 'झरोखें' जैसी रचनाओं ने भी

उन्हें पुरस्कार दिलवाये थे । साहनीजी जैसे बडे रचनाकार को उपर्युक्त सम्मान जो प्राप्त हुए है वे उनके कृतित्त्व की उज्वलता को प्रदर्शित करते हैं ।

२.१.१५ : प्रगतिशील आन्दोलन का इतिहास

साहनीजी प्रगतिशील लेखक संघ से एक पदाधिकारी के रूप में लम्बे समय तक जुडे रहे। अक्रोशियन लेखक संघ के पदाधिकारी सज्जाद जहीर के १९७२ में निधन के बाद यह दायित्व साहनीजी ने संभाला था । सन् १९७६ से १९८६ तक वे संघ के महासचिव पर बिराजमान रहे थे। उनके व्यक्तित्त्व में संगठक एवम् लेखक के गुणों का अनोखा समन्वय था। खगेन्द्र ठाकुर उनके व्यक्तित्त्व और कार्यशैली के संबंध में कहते है कि ''वे धीमी गति से मध्यम आवाज में बोलते थे, संक्षेप में अपनी बात कह जाते थे, लेकिन अध्ययन और अनुभव के दुर्लभ सामंजस्य से वे हेसी बाते बोलते थे कि उन्हें सुनने और विचार करने को विवश होना पड्ता था । यह विवशता इतनी स्वाभाविक थी कि मन प्रसन्न हो जाता था । उनके सौम्य चेहरे और मध्यम आवाज में तो अनोखा ताल–मेल था ही, अनुभव सिद्ध बातों से उनका सौंदर्य और बढ जाता था ।''[३८] वह संगठन के किसीभी कार्य को निम्न नहीं मानते थे । उनके कर्मठ और समर्पित विचारो में किसीभी प्रकार के आयोजन को छापने याँ बाटने के काम, अखबारो में सूचना देने का काम या हाल का प्रबंध करके बाहरी व्यवस्था और लेखको की तमाम व्यवस्था की जिम्मेदारी के काममें नि:संकोच जुट जाते थे । प्रगतीशील लेखक संघ को आपने कभी बाधक नहीं माना था । वे वामपंथी विचार धारा के प्रति प्रतिबद्ध होते हुए भी उन्होने यहा माना कि कोई भी लेखक मात्र विचारधारा से त्याग भी सकता है। उनका मानना था कि लेखन के क्षेत्र में विचारधार की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है परन्तु निर्णायक नहीं होती । विचारधारा नजरिया देती है किन्तु कलाकार नहीं बनाती । साहनीजी का मानना था कि, ''प्रगतिशीलता और समाजोन्मुखता की लहर नवजागरण काल से ही उठने लगी थी । नवजागरण काल में यह समजोन्मुखता व्यक्ति के आचार व्यवहार को बेहतर बनाने, समाज में पाई जानेवाली दुरीतियों को दूर करने आदि जैसे विषयो पर केन्द्रित थी । कुछ समय बाद जब देश की आजादी की लहर जोरो से उठी तो साहित्य में यह समाजोन्मुखता देशभक्ति

और देशव्यापी स्वतंत्रता संग्राम के साथ जुड्ने के आग्रह को व्यक्त करने लगी और जब समाजवादी विचारधार का प्रभाव बढने लगा तो साहित्य में उनकी अभिव्यक्ति शोषण मुक्त, न्यायसंगत व्यवस्था की स्थापना के आग्रह के रूप में होने लगी ।''[३९] जब प्रगतिशील लेखक संघ का पहला सम्मेलन १९३६ में लखनऊँ में हुआ था उसकी अध्यक्षता में प्रेमचंदजी थे तब उसे ख्याति दिलाने में साहनीजी की अनूठी भूमिका थी । सही माईने में बीसवीं सदी के आठवे और नवे देशक में साहनीजी की निगरानी में प्रगतिशील आन्दोलन का सांस्कृतिक जागरण चरितार्थ हुआ । साहनीजी ने प्रगतिशील आंदोलन को गति प्रदान करने मे जी जान लगा दिया था। वे निरपेक्षा सापेक्षता के साथ धीरे–धीरे प्रगतिशील आंदोलन के सूत्रधार बने और वे प्रवर्तक या सूत्रधार के दिखावे की लोलुपता से भी दूर रहे ।'' अपने लेखन से उन्होंने उसी तरह अपने समय के पाठकों और सहयायी लेखकों की चेतना का नायकत्व ग्रहण कर लिया, जैसे प्रगतिशील लेखक संघ की अध्यक्षता करने के पहले ही प्रेमचंदने नामकत्व ग्रहण कर लिया था ।''[४०] इसतरह प्रगतिशील आन्दोलन में भी साहनीजी ने सहकार दिया था ।

२.१.१६ : परदेश गमन

साहनीजी ने विभिन्न देशो की यात्राओं को भी समय – समय पर अनुभूति प्राप्त कि थी। सन् १९५७ में भारत सरकार ने मास्को के अनुवादक के रूपमें उनका चयन किया तब वे सन् १९६३ तक मास्को में अनुवादक की भूमिका निभाते रहें । इसी दौरान, उन्होंने युरोप के कई देशों की यात्रायें की । वे चेलोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग में समकालीन हिन्दी लेखक निर्मल वर्मा को मिले और साथ ही प्राग की प्रसिद्ध लोककथा पर 'हानूश' नामक नाटक की रचना भी की । वे ७ साल मास्को में रहे । अनुवादक की भूमिका इसकदर निभाते रहे की इस व्यस्तता में वे सोवियत संघ को निकट से देखने का कम सौभाग्य पा सके । भारत लौटने के बाद सन् १९७६ के आस–पास उन्होंने ऐशियाई लेखक संघ के कार्यकलायों में भाग लिया । इस वक्त में वे कई सुविख्यात लेखकों के सम्पर्क में आये जिनमें फिलिस्तीन कवि महमूद दरवेश, फैज अहमद फैज दक्षिण आफिका के एलेकस ला गूमा, अंगोला के आगस्टीनो नेटो आदि से मिलें । अफ्रो–ऐशियाई

देशों की यात्राओं में भी उन्होंने मि टयुनीसिया, सीरिया, अंगोला, युनान, मेडागास्कर, मैाजाम्बीक, वियतनाम, उत्तरी कोरिया, टर्की आदि की मुलाकात ली । अपनी यात्राओं के अनुभवो को स्मूण करते हुए खुद साहनीजी कहते है कि, ''इन यात्राओं को याद करते हुए लगता है जैसे अनेक प्रदर्शनिया देख रहा हूँ। भले ही वे दमिश्क और ट्यूनिश के बाजार रहे हों, मिस्र के अभिभूत करनेवाले पिरामिड और अद्‌भूत संग्रहालय यूनान के एक्रोपोलिस, अलेकजांड्रिया के प्राचीन भवनों के भग्नावशेष । ऐसी भी देखा जो हृदय विदारक था, जो दिल पर खरोच छोड गया है और बहुत कुछ ऐसा भी जोड बडा प्रेरणाप्रद और अविस्मरणीय था।''[४१] साहनीजी को यात्राओं के दौरान विभिन्न अनुभवों की प्राप्ति हुई थी । उन अनुभवों में साहनीजी ने अक्रो–ऐशियाई लेखक संघ में काम करते हुए सोवियत जीवन के अनेक पहलुओं पर इनका ध्यान केन्द्रित रहा । ''उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि सोवियत व्यवस्थाने नागरिकों को महत्त्वपूर्ण सुविधायें प्रदान की थी जिससे नागरिको में व्यवस्था के प्रति दायित्त्व भावना, जुडाव और ज्यादा गहरा होना चाहिए था । इसके विपरीत उसमें शिथिलता आई, व्यवस्था के साथ और ज्यादा जुड्ने की जगह यह उसके प्रति उदासीन रहने लगा ।''[४२] साहनीजी इस व्यवस्था के बारे में कहते थे कि शायद इन सब बातो से व्यक्ति को प्रोत्साहित नहीं किया जा सकता था । उसके वातावरण में इतनी प्रेरणा ही नहीं थी । इस प्रकार उच्च विचार के धनी साहनीजी परदेशगमन से भी बहुत कुछ सीखें, समझे और अनुभूति भी की थी ।

२.१.१७ : निधन

हिन्दी साहित्य के अद्वितीय उपन्यासकार में साहनीजी का स्थान था। जीवन के अनगिनत संघर्ष एवं दु:खो को झेलनेवाले बहुमुखी प्रतिभा के धनि भीष्मजीने इस संसार से और साहित्य से ११–जुलाई–२००३ को नाता तोड दिया क्योंकि इस कालजची और अविस्मरणीय रचनाकार ने अपने शरीर से आत्मा को अलग कर दिया था । जीवन के ८८ बसंत उन्होंने देखे थे। जीवन में बिती सारी बातो की अनुभूति को उनकी कृतियों में डाल दिया था । इनके बारे में कमलेश्वर का यह कथन समाचीन लगत है, वे कहते है, ''उसका होना ५००० वर्षो की

साहित्यिक सभ्यता की रक्षा करना या जो इस देश को विरासत में मिली है ।''[४३] भीष्मजी का आजीवन वैचारिक स्तर पर प्रतिबद्ध रहे । उन्होंने कभी अपनी प्रशंसा नहीं की । साहित्य के प्रति उनका अथाग योगदान था । जीवन के अंतीम यात्रा खत्म करते – करते उन्होंने 'आज के अतीत' नामक कलासिक आत्मकथा लिख अर्पण की । मानवजीवन में आस्था, जिजीविषा और मानवतावाद के सजग प्रहरी तथा कर्मयोगी के निधन से हिन्दी साहित्य को अतुलनीय हानी हुई । उनकी कृतियों में वे आज भी अमर है, जीवंत है ।

२.२ : भीष्म साहनीजी – कृतित्त्व का संक्षिप्त परिचय

भीष्म साहनीजी एक यथार्थवादी लेखक और कहानीकार थे । साहनीजी के मीजाज में एक खुबी यह थी कि उनमें जल्दबाजी नहीं थी, सोचकर थोडा बोलते थे । कहानी के कथावस्तु का चुनाव भी वह बडे धीरज से करते थे, साधारण लोगो के जीवन की छोटी–छोटी वाते वह खुद अपनी आंखो से देखते थे । उन लोगों की सामाजिक और व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करते थे । इनकी रचनाओं में कहीं भी अस्वाभाविकता नहीं आ पाती थी । साहनीजी की कृतियाँ अपने समय का जीवन दस्तावेज कही जा सकती है । वह अपने भोगे हुए को ही कहानी का भाग बनाते थे । अपनी अनुभूतियों को लेखनी में बाँटते थे । उनकी कृतित्व का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित हैं ।

साहनीजी सिर्फ कहानीकार के या उपन्यासकार की सीमा में न बँधकर नाटक, जीवनी, निबंध, बालसाहित्य और अनुवाद आदि प्रकार के साहित्य निर्माण किया हैं । साथ ही वे संपादन के क्षेत्र में काफी विख्यात रहे थे ।

२.२.१ : कहानीकार भीष्म साहनी

देश के बँटवारे के बाद पहले बम्बई और बाद में दिल्ली आये साहनीजी कालेज में अध्यापक पद पर नियुक्त हुए तब साथ ही साहित्यसृजन करते थे एसा माना जाता है । किन्तु साहनीजी जब स्कूल में पढते थे तब ही अपनी पहली कहानी लिखी थी । उनकी कहानी विद्या

का तब से आरंभ हो चुका था । पहली कहानी का नाम 'रावी' था जो सन् १९३४ में कोलेज पत्रिका 'रावी' में प्रकाशित हुई थी । साहनीजी की कहानियाँ सभी दृष्टि से सुगठित है । इनकी कहानी में कहीं भी कृत्रिमता नजर नहीं आती थी । साहनीजी ने अपनी कहानियो में वर्तमान शासन तंत्र एवं भ्रष्टाचार आदि का समग्रता के साथ विश्लेषण किया है । परिवर्तन को बहुत गहराई से देखते हुए उन्होंने समाज के बदलते सामाजिक सम्बन्धों तथा मानवीय सम्बन्धों को रेखांकित् किया है । साहनीजी की कहानियों का प्रगतिशील नजरिया उन्हें अन्य रचनाकारो से अलग कर देता है । उन्होंने समाज की विसंगतियों को पहचानकर उनके खिलाफ आवाज उठाई थी । उनकी रचना का एक आयाम संघर्ष भी था । कभी साहनीजी नये समाज और एक नये मनुष्य के भावि रूप की झांकी पेश करने में उभरते थे, कभी वह विद्रोह और क्रान्ति की आवेशमूलक अभिव्यक्ति के रूप में सामने आते थे । साहनीजी की कहानियाँ कलावादी सांकेतिकता के चक्कर में पाठकों को उलझाती नहीं हैं । वे अमूर्तन का सहारा लेकर पाठकों को भरमाती भी नहीं हैं, उनकी कहानियों जिन्दगी के विस्तार और वैविध्य के आत्मीय सहज अनुभवो की कहानियाँ हैं । उनकी कहानियों की यथार्थता तभी हमारे समक्ष आ सकती है जब हम उनकी कहानियों का विवेचन करें। भीष्मसाहनीजी का संक्षिप्त कहानीलेखन निम्नलिखित हैं ।

२.२.१.१ : कहानी

क्रम	संग्रह का नाम	प्रकाशक	संस्करण
१	भाग्यरेखा	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	१९५३
२	पहलापाठ	साहनी प्रकाशन, नई दिल्ली–६	१६५७
३	भटकती राख	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–२	१९६६
४	पटरियाँ	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–२	१९७३
५	वाऽचू	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–२	१९७८
६	शोभायात्रा	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–२	१९८१
७	निशाचर	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–२	१९८३

८	पाली	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–२	१९८९
९	डायन	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–२	१९९८
१०	प्रतिनिधि कहानियाँ	राजकमल पेपर बैंक्स, नई दिल्ली	१९९३
११	मेरी प्रिय कहानियाँ	राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट–दिल्ली	१९९३
१२	चर्चित कहानियाँ	सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली–२	१९९७

साहनीजी के इन बारह कहानी संग्रह के अंतर्गत १५९ कहानियाँ शामिल हैं । उन कहानी संग्रह का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित हैं ।

२.२.१.१.१ : भाग्यरेखा

इस कहानी संग्रह में कृषक वर्ग से सम्बन्ध रखनेवाली पारिवारिक उच्च,मध्यमवर्ग से सम्बन्ध रखती है। जिसमें और 'अनोखी हडडी' जैसे परिकथा भी हैं । इसमें कालका वर्कशोप में काम करने वाले मजदूर की तीन ऊंगलियां फैक्टरी में कट जाती है और मई दिवस के दिन कनाट प्लेस के बाग में मजदूर और ज्योतिष उपस्थित हैं । सारी कहानी में कहानीकार श्रमिक वर्ग की सामूहिक संघर्ष शक्ति में आस्था व्यक्त करता हैं । भाग्यरेखा नामक कहानी संग्रह में कुल १४ कहानियाँ संकलित हैं । जिनके नाम इसप्रकार हैं ।

'जोत', 'अशान्त रूहे', 'शिष्टाचार', 'अनोखी हडडी', 'तमगे', 'क्रिकेट मेच', 'मुर्गी की किंमत', 'नीली आंखे', 'ऊब', 'गंगो का जाया', 'भाग्य–रेखा', 'घर–बेघर', 'खून के छींटे', 'घर की इज्जत' ।

:: जोत ::

यह भाग्यरेखा संकलन की पहली कहानी हैं । इस कहानी में कांगडे के अपने भौगौलिक–सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिवेश में एक किशान की जिन्दगी, जमीन के साथ उसका लगाव और जमीन को बेचने के लिए उठाये गए संघर्ष तथा बरबादी का चित्रण किया गया हैं । ''हम समज सकते है कि स्वतंत्र भारत में हाकिम और अफसर को देवता समजा जाता हैं ।''[१] इस

तरह जोत कहानी में किसान की संघर्षशीलता, किसान जीवन और उसकी मानसिकता, भारत के अधिकारीयों की जन विरोधी, जीवन और राष्ट्र विरोधी भूमिका के कुछ स्वर इस कहानी में साफ झलकते हैं ।

:: अशान्त रूहें ::

साहनीजी की अन्य कहानीओं में इस कहानी का स्थान अलौकिक, अनन्य और असाधारण कहा जा सकता है । जिसमें इस तथ्यों को सामने लाया गया है कि, संसाररूपी तपते हुए अग्नि–कुण्ड में सभी को अपनी आहूति देनी पड्ती हैं । यह आहूति भी बेदाग है वैसी नवीनता इस कहानी में हैं । विशिष्ट मन:स्थिति की दार्शनिक मुद्राओं का इस कहानी में स्थान दिया गया हैं।

:: शिष्टाचार ::

शिष्टाचार कहानी में इस बात को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि अपने को शिष्ट, संस्कारी, और उच्च माननेवाले मध्यमवर्ग की तुलना में निम्नवर्ग ज्यादा संस्कारी और शिष्ट होते हैं। इसमें मध्यमवर्ग की संकीर्ण मानसिकता पर व्यंग्य किया है। जिसमें हेतु नामक नौकर रामगोपाल बाबू के यहा काम करता था। रामगोपालबाबू के बेटे के मुण्डन के वक्त छुट्टी मांगता है। सारे महेमानों के सामने अपमानित करके निकाल देते हैं । उसकी तनखवाह भी रोक दी जाती है। जब रास्ते में हेतु रामगोपालबाबु को मिला तब हेतु से छुट्टी माँगने का कारण पूछा तो उसने बताया कि उसे अपने बेटे के मरने की खबर घर के खुशी के माहौल में बताना उचित नहीं समजा। इस तरह हेतु के उत्तर से रामगोपाल बाबू और उनकी पत्नी की शर्मजनक मानसिकता सामने आती है। साहनीजी की सरल शैली में फूट–फूटकर भरी हुई व्यग्यता इस कहानी को उभारती है।

:: अनोखी हड्डी ::

''मनुष्य मनोकामना की गठरी है'' इस पंक्ति को चरितार्थ करने वाली यह कहानी है । उसकी कामना का कोई अन्त नहीं ना कोई सीमा । वह अपनी कामना पूर्ण करने के लिए हिंसा, अत्याचार या अन्याय का रास्ता भी अपना सकता है । कलिंग युद्ध का अशोक और स्वांग देश के महाराज का दम्भ भी इस बात पर टकराकर निरीह हो उठती है, ''एक बूढे आदमी द्वारा लायी गई अनोखी हड्डी से ।'' साहनीजी की इस रचना को उँचाई तक पहुँचने से कोई रोक नहीं सकता क्योंकि यह कहानी हमें प्रेमचन्द, सुदर्शन की कहानियों की याद दिलाती हैं।

:: तमगे ::

'तमगे' कहानी में एक मां की ममता तथा एक रिटायर्ड घायल फौजी की पीडा से बोफिल जिन्दगी तथा मन का यथार्थ उद्‌घाटित हुआ है । यह पारिवारिक कहानी है। जिसमें यह भी दिखाया गया है कि सैनिक जब युद्ध से अपाहिज बनकर लौंटते है तो उनके 'तमगे' का उनके लिए मोल होता है, न परिवारवालों के लिए ।

:: क्रिकेट मैच ::

'क्रिकेट मैच' कहानी आधुनिक दाम्पत्य–जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करते हुए पति तथा पत्नी के दाम्पत्य संबंध को क्रिकेट मैच के प्रतीक के माध्यम से खोलती है । इस कहानी के माध्यम से लेखक औरत एवं पुरूष को बाँधे रखना चाहते है और पुरूष उससे छुटकारा पाना चाहता है । इसी बात को कहानी में पुष्पा और रमेश के माध्यम से दिखाया गया है ।

:: नीली आँखे ::

नीली आँखे कहानी आर्थिक विवशता उसे यह देखने पर भी मजबूर करती है कि उसी के सामने उसकी पत्नी को कोई ले जा रहा है । कहानी का विषय गरीब की यातना से जुडा हुआ है। गाँव से प्रेम–विवाह करके शहर कुछ कमाने के लिए आनेवाले दम्पति को किस गहरी यातना के

दौर से गुजरना पड्ता है, कहानी उनकी इसी यातना को उभारती है । वर्तमान व्यवस्था में गरीबी और निरीहता कितना बड्ा अभिशाप है, इस तथ्य के साथ औरत के प्रति इस व्यवस्था में गाँववाले आम–आदमी की पाशव मानसिकता को भी कहानी गहरे आर्थिक सामाजिक संदर्भो से उभारती है ।

:: ऊब ::

इस कहानी में एक अध्यापक के परीक्षा होल के तीन घंटा की ऊब और एक चपरासी के पच्चीस वर्षोके ऊब की तुलना है। बिलकुल नये आयाम पर आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई और व्यग्य का आश्रय लेती हुई अध्यापकीय जीवन की एक घटना को मनोवैज्ञानिक बारीकी के साथ उभारती है । परीक्षा के निरीक्षण के दौरान अध्यापक की ऊब का सबब बनता है परंतु चपरासी २५ साल एक ही स्टुल पर बैठकर गुजार देता है और जब अपनी सेवा निवृत्ति के बाद अपने बेटे को अपना चपरासी पर मिल लाने की सिफारिश करता है, उस संदर्भ में ऊब का त्रासद यथार्थ सामने आता हैं ।

:: गंगो का जाया ::

'गंगो का जाया' कहानी में गर्भवती की मजदूरी छूट जाती है । आर्थिक विवशता बेटे को बूट पॉलिश सिखा देती है जो खो जाता है । विपन्नता के यहाँ तकदीर भी साथ नहीं देती है । समाज का अपेक्षित निम्नवर्ग जहाँ एक ओर अपनी अभावग्रस्त दारूण परिस्थितियों से त्रस्त है, वही दूसरी ओर समाज के संपन्न एवं भद्र समाज की अपेक्षा, घृणा और निर्ममता का शिकार भी है । श्रमिक दम्पति के कठोर परिश्रम के बावजूद अभाव और दारिद्रय का शिकार हैं । गंगो मजदूरी करती है । पर गर्भवती होने के कारण झुककर टाकरी उठाना उसे कुएँ से गहरा पानी छूना बराबर लगता है वह काम बदलकर इंट पकड्ने का काम करने को सोचती है पर वह इस काम से भी डरती है कि कहीं इंट पेट पर ना लग जाये । ठेकेदार आता है और गंगा को खडी देखकर डांटता है और काम से नीकाल देता है । गंगा काम ढूंढने से भटकती है कहीं काम नहीं मिलता है ।

उसका पति धीसू भी सरकारी सड्क का काम खत्म होने से बेकार हो जाता है । पेट भर खाना भी नसीब न होने से रीसा वो छह बरस का लड्का है वह झोपडे के आसपास डोलता है । धीसू रीसा को गणेशी के वहां बूट–पोलिश्र का काम करने सीखने भेजने का निश्चय करता है । रीसा उसके यहां काम सीखने जाते वक्त प्रकृति के मायाजाल में खोकिर इधर–उधर भटककर घर वापस आ जाता है । दूसरे दिन भी ऐसा ही होता है । बाद में धीसू खुद जाकर रीसा को गणेशी के यहाँ छोड आता है । बाद में रीसा खो जाने घटना घटती है गंगा रात तक रीसा का इंतजार करती हुं शून्य में ताकती रहती है । तभी पेट में दूसरा बच्च करवट लेता है और गंगा बोलती है कि इसे जन्म लेसे के लिए क्यों इतनी बेचेनी है ? इसी द्रवित कर देने वाले प्रश्न के साथ कहानी खत्म हो जाती है । इस प्रकार राजधानी दिल्ली की भूमि पर निम्नवर्ग की दरिद्रता को साहनीजी ने इस कहानी में लिया है ।

:: भाग्यरेखा ::

इस कहानी में लेखक ने भविष्य बतानेवाले एक ज्योतिषी तथा दम से जर्जर मनुष्य के आपनी संवादो को रखकर इस तथ्य को रेखांकित किया है कि मनुष्य का भाग्य उसके हाथ की लकीरों में नही, उसके श्रम–संगठन तथा कर्मठता में है । मनुष्य के भाग्य का निर्धारण देवता नहीं उसका अपना संघर्ष करता है । मनुष्य अपना इतिहास खुद बनाता है । हाथ की लकीर दिखानेवाला दम का मरीज तथा लकीरें देखकर भविष्य बतानेवाला ज्योतिषी दोनो भूखे है, जबकि उनका वास्तविक भाग्य निर्मित किया जा रहा है उस आम जनता के हाथो, जो एकजुट होकर उनके अपने दुर्भाग्य बरपा करनेवाली शक्तियों से लड रहते हैं । भीष्मजी ने इस कहानी में श्रम की सार्थकता का प्रतिपादन किया है । उन्होंने गतिशील सामाजिक धरातल पर इस कहानी की रचना की है । प्रगतिवादी विचारधारा को प्रस्तुत करने वाली यह कहानी मनुष्य को अपने संघर्ष शक्ति में विश्वास प्रकट करती है ।

:: घर–बेघर ::

'घर–बेघर' कहानी बच्चे चोरी करके उन पर ममता लुटाने वाली औरत की आर्थिक विवशता की कहानी है । वह औरत सरकारी कोठरी में पिछले दस सालो से रह रही है जिसकी वजह से पुलिस परेशान है । जानवरों से भी बदतर जिन्दगी बितानेवाले तथा व्यवस्था द्वारा पीड्ति और अपमानित घर से बेघर किए गए इन्सानो में भी मानवीय संवेदनाए होती है । इस तथ्य को इस कहानी में कलात्मक रूप से उजागर किया है । साधारण जन के प्रति भीष्मजी की आत्मीय संवेदना अन्य तमाम कहानियों के साथ इस कहानी में भी मुखरित हुई है ।

:: खून के छींटे ::

यह कहानी किसान के जीवन को चित्रित करनेवाली कहानी है । जमीन का लालच किसानवर्ग की मानसिकता को किस प्रकार स्वार्थ–प्ररित बना देता है, लाभ–लोभ की यह मानसिकता किस प्रकार खून के रिश्ते को भी निरर्थक साबित कर देती है, इस तथ्य को उजागर करते हुए भीष्मजीने अंतत: खून के अपने प्रभाव को भी रेखांकित किया है । अर्थाभाव से ग्रस्त भाई अपने चाचा के बेटे को पागल बनाने पर मजबूर हो जाता है । भूख और गरीबी का नतीजा क्या होता है, यह इस कहानी में दर्शाया गया है ।

:: घर की इज्जत ::

इस कहानी कि स्वच्छंद विचारो वाली बहू परिवार की रूढियो के प्रति विद्रोह कर लेती है और नाटक में काम कर लेती है । संयुक्त परिवार के अन्तविरोधो को उजागर करनेवाली यह कहानी दफियानूसी मानसिकता के साथ नई चेतना के दर्शन को चित्रित करती है । घर के मुखिया बडे भाई समाज–सुधार तथा नारी–जागरण की हिमायत करते हुए भी घर की छोडी बहू का महज इस कारण नाटक में भाग नहीं लेने देना चाहते कि उनकी इज्जत पर आंच आएगी । भद्र–समाज की महिलाएँ तथा बहू–बेटियों का इस प्रकार सार्वजनिक प्रदर्शन में हिस्सा लेना ठीक नहीं है । उनके चरित्र के अन्तविरोध और दोगलेपन को व्यग्य की धार से गुजरते हुए भीष्मजी

अन्तत: छोटी बहू को संकल्प को वरीयता देते है । बहू नाटक में शामिल हो जाती है । इस प्रकार परंपरागत मूल्यों और नए मूल्य एवं युग की नई रोशनी के संघर्षमय सोचगत टकराव को साहनीजीने चेतना दी है ।

साहनीजी की यथार्थवादी रचनाओं में एव विकासशील सामाजिक चेतना नजर आती है । साहनीजीने जीवन के यथार्थ को यथावत स्थिति में रखकर नवजाग्रत विवेक का द्वन्द्व उजागर किया है ।

२.२.१.१.२ : पहलापाठ

साहनीजी की प्रतिभा कौशल को साफ झलकानेवाली कहानीयों में इस कहानीसंग्रह का अच्छा योगदान है । वे जीवन के विविध पहलुओं एवं भंगिमाओं को सहजता के साथ हमारे समक्ष उद्‌घाटित करते है । सामाजिक प्रतिबद्धता के नाम पर नीरस एवं उपदेशात्मक रचनाएँ साहनीजी ने दी है । इस कहानी संग्रह के अंतर्गत की कहानीओं का क्रमश: संक्षिप्त परिचय यहां मौजुद है ।

:: चीफ की दावत ::

पहलापाठ कहानी संग्रह की प्रथम कहानी चीफ की दावत है । जो अपने समय की एक बहुत चर्चित कहानी रही तथा संवेदना एवम् कथा की सामायिकता की वजह से आज भी उतनी ही पठनीय है जितनी उस समय थी । प्रस्तुत कहानी में मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियों का उद्‌घाटन है । शामनाथ के घर चीफ की दावत हैं । एक मध्यवर्गीय दफतर के बाबू का अफसर घर पे आये यह बात सौभाग्यशाली मानी जाती है । पति–पत्नी फसी तैयारी में लगते हैं । घर को इस तरह संवारने में लग जाते है कि उनके रहन सहन, तौर–तरीकों का चीफ पर रोब पड जाये । सबकुछ ठीकाने पर रखते है तभी शामनाथ का ध्यान अपनी मां पर पड्ता है । वह अपनी पत्नी से कहते है , ''माँ का क्या होगा?''[२] उनको डर था कि बुढापे की कुरूपता चीफ की नजर में आ गई तो उनको बुरा लगेगा। लेखक ने पदोन्नति में लालसा रखनेवाले मध्यमवर्गीय व्यक्ति की प्रदर्शन प्रियता, आधुनिकता और सुसंस्कृति का पाखंड इसी कहानी में बतलाते है ।

:: रानी मेहतो ::

रानी मेहतो मानवीय श्रम की गरिमा में विश्वास करने वाली कहानी है । इस कहानी का नाम कथानक के पात्र के नाम से रखा गया है । काँगडा जिले में प्रचलित लोक कथा को आधार बनाकर यह कहानी लिखी गई है।

यह उपदेशपरक कहानी है जिसमें श्रम और निष्ठा की कमाई की बात की गई है । लालच को पतन का कारण बताया है साथ ही दूसरों का हक छीनकर कोई कमी सुख और चैन नहीं पा सकता इस बात को यथार्थ करने का प्रयास किया गया है ।

:: भाई बंद ::

इस संग्रह की अगली कहानी भाई बंद है । जिसमें ग्रामजनो की उस नैतिक मूल्य चेतना को उजागर किया गया है जो शहरी जीवन के अवसरवाद तथा मूल्य–हीनता के बीच अभी भी बनी हुई है । अपने गांव–घर के दोस्त को जरूरत पर ४० रूपये कर्ज देकर और अपनी जरूरत पर अपने दिये हुए रूपये न पाकर भी कहानी का पात्र अपने दोस्त के अफसर से शिकायत कर अपने रूपये नहीं पाना चाहता । गाँव तथा नगर अपनी–अपनी नैतिकता के साथ आमने–सामने इस कहानी में आते है और अपनी वास्तविकता का खुलासा करते नजब आते है । इस प्रकार मित्रता के संबंधो की यथार्थता को उजागर करती अनोखी कहानी हैं ।

:: पहला पाठ ::

साहनीजी के संग्रह का नामकरण इसी कहानी के आधार पर हुआ है। गुरूकुल का बाल ब्रह्मचारी देवदूत अपने गुरू वानप्रस्थीजी से पहला पाठ सामप्रदायिकता का पढता है। देवव्रत कुछ समज नहीं पाता है कि यह कैसी पढाई है?, पढाया कुछ और जाता है और व्यवहार में कुछ और।

समग्र कहानी परंपरा से चली आ रही जाति–पांति, भेदभाव रखनेवाली रूढिगत मान्यताओं पर व्यंग्य करनेवाली कहानी है । इसमें सामप्रदायिक उन्माद के खोखलेपन पर प्रहार किया है । साथ ही, मानवीय एकता की खोज भी की गई है जो साम्प्रदायिक असत्य के बीच झूझती हुई है ।

:: प्रणय लीला ::

प्रणयलीला में साहनीजी ने इस परंपरागत सत्य को प्रस्तुत किया है कि पुरूष किस प्रकार नारी को अपने छल–कपट का शिकार बनाता है और नारी उसके द्वारा हंमेशा ठगी जाती है। प्रणयलीला के 'प्यार त्रिकोण' को हमारे सामने रखी गयी है। जिसमें प्यार की गलतफहमी से होते हुए दु:ख को दर्शाया गया है।

:: पहिचान ::

'पहिचान' कहानी अर्थाभाव की समस्या को दर्शाती है। एक ऐसी औरत की कहानी है जिसे लेखक पहचा नही पाता । कहानी के आरम्भ में ही अपनी जिज्ञासा व्यक्त करते हुए लेखक कहता है – ''कई बार किसी आदमी का पूरा परिचय पाने में बरसो लग जाते है और बरसों के बाद भी आप को यकीन नहीं होता कि आप उसे पूरी तरह से जान पाये है या नहीं ।''

समग्र कहानी उस औरत के जीवन की व्यथा को व्यक्त करती है। ऐसी नारी की मनोगाथा का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया गया है।

:: समाधि भाई रामसिंह ::

प्रस्तुत कहानी संग्रह की अगली कहानी है, ''समाधि भाई रामसिंह''। धार्मिक अन्धश्रद्धा और उन्माद साधारण जन को कितना अमानवीय बना देता है इसका उद्‌घाटन प्रस्तुत कहानी में है । भाई रामसिंह की सारी सेवा भूलाकर जनता उसे पत्थर और जूतो से इसलिए मारती है कि अपनी घोषणा के अनुसार उसने निश्चित समय पर समाधि में शरीर त्याग क्यों नहीं किया ? भाई

रामसिंह दिन चढते जब सचमुच शरीर छोड देता है तब जनता अपने पिछले कृत्यों को भूलाकर पुन: उस पर फूलों की वर्षा करती है, उसकी समाधि बना दी जाती है । अज्ञान जनता की अन्ध श्रद्धा पर और अन्धश्रध्धालुओं के अमानवीय आचरण पर व्यंग्य किया है यह इस कहानी में।

:: बाप–बेटा ::

संक्षिप्त किन्तु मार्मिक कहानी है । १७ वर्षीय बेटे को फौज में भर्ती कराने के लिए आया उसका बुढा बाप बेटे को क्या नसीहते देता है और किस प्रकार उससे जुदा होता है, कहानी में गहरी मानवीय करूणा के साथ यह सब दर्शाया गया है । व्यंग्य के सासाथ मीष्मजी के पास मानवीय संवेदना की तथा मानव मन की गहराई से चाह पाने की जो क्षमता है वह उनकी अनेक कहानियों में प्राण फूंक देती है । प्रस्तुत कहानी भी उसका उदाहरण है ।

:: काँटे की चुभन ::

यह दो मित्रो की कहानी है । जो क्रमश: आर्यसमाज तथा सनातन धर्म पर निष्ठा रखनेवाले है । मैत्री के बावजूद धार्मिक स्तर पर उनमें कहीं कोई समझौता नहीं है । अन्तत: उनकी अपनी संताने जब उनके बीच के धार्मिक अलगाव को खत्म कर उन्हें एक दूसरे से अंतरात्मा में वे अलग–अलग धार्मिक निष्ठाओं के ही बने रहते हैं । उनके बीच खडी धार्मिक निष्ठा की यह दीवार पूरी तरह ध्वस्त नहीं हो पाती । यह कहानी धार्मिक जड्ता की पर्ते खोलती है, धर्म की आड में रिश्ते–नाते अपना मूल्य किस प्रकार खो देते है, यह दिखाने का लेखक ने सफल प्रयास किया है ।

:: एष धर्म: सनातन् ::

यह कहानी एक मंदिर के पुजारी की मानसिक विड्म्बना को व्यक्त करती है प्रस्तुत कहानी में एक धर्मप्रिय रूढि दास्त ब्राह्मण पुजारी की मनोदशा का वर्णन किया गया है । भूख के सामने बडे–बडो को घुटने टेकने पड्ते है । भूख की न कोई जाति है न कोई धर्म । जिस चमार

औरडोम को मंदिर का पुजारी नफरत करता है वही अछूत कहानी के अन्त में पुजारी की भूख मिटाता है । उसे रोटी और लड्डु देता है । लेखक के अनुसार सनातन धर्म वह है जो वक्त पर दूसरों की मदद हेतु हमें प्रेरित करे । इससे बढकर और कोई धर्म नहीं है ।

:: पाप–पुण्य ::

कहानी आर्य समाज की मानसिकता के उस रूढिवाद को उद्घाटित करती है जिसके तहत जन्म से ही बच्चे के स्वाभाविक विकास को अवरूद्ध कर उन्हें एक जड किस्म की नैतिकता में बाँधने की कोशिश की जाती है । नैतिकता का यह आरोपण उनके मास में पाप–पुण्य की शकल में होता है । कुछ बातें पुण्य मानी जाती है, कुछ पाप, परिणाम यह निकलता है कि बच्चे भीरू बनते है, उनका सहज स्वाभाविक विकास नहीं हो पाता । कहानी में प्रामाणकिता इस नाते है कि भीष्मजी आर्यसमाज की इस मानसिकता के दर्शक ही नहीं, भुक्तभोगी भी रहे है । कहानी एक व्यग्य प्रदर्शित करती है रूढ मानसिकता पर और यहाँ आर्यसमाज उसका लक्ष्य है ।

:: ललिता ::

यह कहानी एक ऐसी लड्की की कहानी है जो बडे घर में ब्याह दिये जाने के नाते शते : शने: उस घर की नैतिकता को अपना लेती है और पहले से नितान्त बदलते हुए रूप में हमारे सामने आती है । समूची कहानी में एक नारी की मनोव्यथा को तथा अन्तत: संघर्ष के क्रम में परिवर्तित होते हुए उसके व्यक्तित्त्व तथा चरित्र को मूर्त किया गया है ।

:: अकाल मृत्यु ::

साहनीजी की इस कहानी का नायक धनराज दूसरा विवाह कर लेने पर भी अपनी पहली पत्नी अनुराधा को नहीं भुला पाता । मौत अनुराधा की स्मृति को मिटाने के बजाय धनराज के मानस में उसे और भी गहरा करती है । मृत्यु की महिमा को अनूठे ढंग से व्यक्त करनेवाली यह कहानी है ।

:: छिपे – चित्त ::

कहानी –संग्रह की अगली कहानी ''छिपे–चित्त'' में लेखक ने हरिसिंह नाम के नौकर की मानसिक विडम्बना को अभिव्यक्ति दी है । कहानी के आरम्भ में लेखक ने प्रश्न किया है – पागल कौन है ? और ज्ञानवान कौन ? यह एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो जीवन के सब कर्तव्य निभाता है समाज की मर्यादाओं का पालन करता है फिरभी उसे पागल कहा जाता है। प्रस्तुत कहानी में एक नौकर की मानसिकता को कलात्मक ढंग से चित्रित किया गया है।

:: फूलां ::

फूलां एक ऐसी औरत की कहानी है जो बाँझ है, उसकी सारी ममता माणों के प्यार में सिमटकर रह जाती है, माणों जो बिल्ली है । पति दाताराम दूसरा ब्याह नहीं करता । समग्र कहानी में फूलां अपनी बिल्ली के लिए परेशान होती रहती है । इस कहानी में नि:सन्तान औरत की मनोव्यथा को मनोवैज्ञानिक ढंग से लेखक ने चित्रित किया है । लेखक ने संतानहीन नारी की दयनीय दशा का चित्रण मार्मिक शैली में किया है ।

२.२.१.१.३ : भटकती राख

इस कहानी संग्रह में संकलित कहानियों में भीष्मजी ने वर्तमान जगत की समस्याओं को अतीत के परिप्रेक्ष्य में रखकर देखने की कोशिश की है।

संकलन की इस कहानी के नाम पर ही संकलन का नामकरण हुआ है। अतीत की एक लोक कथा के बहाने इस कहानी में भीष्मजी ने अतीत के माध्यम से वर्तमान पर रोशनी डाली है। आसपास के खेतो में चमकते धूल के कण अतीत की लोककथाओं में लिखित एक ऐसे राख के कण है, जिसने अन्यायों से जुझते हुए दु:खी लोगों के लिए अपने प्राण निछावर किए। साहनीजी इस प्रकार रोमानी कल्पनाओं में भी ऐसे कथापट को बुन लेते है, जो कहीं गहरे भारतीय जीवन से उनके आत्मीय लगाव को उभारता है ।

:: माता–विमाता ::

यह कहानी औरत से जुडी हुई है । जिसमें एक औरत द्वारा जन्म दिये और दूसरी द्वारा पाली गयी संतान के अधिार की समस्या का मार्मिक चित्रण है ।

:: यादे ::

'यादे'कहानी हक ऐसी बुढियाँ की कहानी है, जो जीवन के सारे मोड लांघकर बुढापे की दहलीज पर खडी मौत को दस्तक दे रही है । बुढापा कितनी मुश्किल से कटता है, उसकी पीडा कैसी होती है ? इस बात का मार्मिक चित्रण भीष्मजीने इस कहानी में किया है । बुढापे में दिन तो जैसे तैसे कट जाता है परन्तु राते काटना बेहद कठिन हो जाता है । लखमी कहानी के अन्त में रामलाल से प्रतीकात्मक भाषा में कहती है –

''रात पड गयी है, बच्चा । मैं रात में बहुत डरती हूँ । रात बूढो की दुश्म होती है । इस प्रकार बुढापे की पीडा को कहानी में बडी गहरी मानवीय संवेदना के साथ कुरेदा गया है । इतना ही नहीं, जीवन की भयानक सच्चाई को भी मार्मिक रूप से व्यक्त किया गया है ।''[३]

:: बीवर ::

इस कहानी में लेखक ने एक कुते के माध्यम से वर्तमान समय में व्याप्त अमानवीयता एवम् अराजकता को अभिव्यक्त किया है ।

आदमी के विभिन्न शौको की जानकारी देते हुए कहानी का आरम्भ किया गया है । समग्र कहानी एक कुत्ते के इर्द–गिर्द घूमती रहती है कुत्ता पालने का शौक एक आम बात है, मध्यवर्गीय समाज में कुता पालना एक फैशन और अपनी शान बढाने का तरीका है । 'बीवर' कुत्ते का नाम है जो कहानी का नायक है। प्रस्तुत कहानी व्यंग्यात्मक है । सरल – स्पष्ट भाषा – शैली में लेखक ने शौकिनों की छीड में से उन लोगो का पर्दाफास किया है जो अपने स्वार्थ के लिए दूसरों की जिन्दगी को सिर्फ मन बहलाने का साधन मात्र मानते हैं ।

:: खून का रिश्ता ::

पूँजीवादी मानसिकता के चलते परम्परागत सारे मानवीय संबंध, यहा तक कि खून के रिश्ते भी, किस तरह पैसे के तराजू पर तुल जाते है, व्यक्ति का स्तर मात्र उसकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर हो जाता है, इस सत्य का उदघाटन उपर्युक्त कहानी में होता है। इसमें एक रिटायर्ड फौजी को अपने बडे भाई के घर तथा परिवार में अपमानित तथा अवहेलित होना पड्ता है, जिस पर इलजाम लगाया जाता है तथा जिसका हर स्तर पर मखौल उडाया जाता है। भीष्मजी की यह कहानी गहरी मानवीय संवेदना के तहत पूँजीवादी मानसिकता से ग्रस्त मध्यवर्गीय ओछेपन को उभारती है।

:: बात की बात ::

इस कहानी में समाज के साधारण जेना पर होने वाले पुलिस अत्याचारों को दर्शाया गया है । सड्क के खामचेवाले, मोची, फुटपाथ के लोग भीष्मजी के यहा कथा–नायक बनकर आते है और उनकी लेखकीय संवेदना का स्पर्श पाकर उनकी लेखनी से उभरनेवाले हमारे दैनदिन जीवन के यथार्थ के साक्षी बनते हैं ।

:: लेनिन का साथी ::

'लेनिन का साथी' कहानी में अपने आपको लेनिन का साथी मानने वाले वृद्ध का वर्णन किया गया है । ''कहानी में आत्मप्रशंसा से ग्रस्त बुद्धिजीवियों पर भीष्मजी का करारा व्यंग्य है ।''[५] विविध वर्गो की मानसिकता के साथ उनके चरित्र की बारीक पर्तो को कुरेदने में छीष्मजी ने कमाल किया है । यह कहानी उनकी इसी पैनी निरीक्षण दृष्टि को हमारी अपने वर्ग की कमजोरियों के साक्ष्य पर प्रस्तुत करती है ।

:: सिफारिशी चिट्ठी ::

लेखक की यह कहानी 'एक क्लर्क की मौत' कहानी की भाँति नौकरशाही तंत्र में एक क्लर्क की अपनी मनोव्यथा को उभारती है । एक निम्नवर्गीय क्लर्क की भीरू मानसिकता तथा

भविष्य के असुरक्षा भाव को तथा उच्च मध्यवर्ग की चोथी सहानुभूति को एक साथ इस कहानी में उभारा गया है । मनोवैज्ञानिक धरातल पर यह कहानी बडी ही प्रभावशाली साबित होती है ।

:: एक रोमेन्टिक कहानी ::

प्रस्तुत कहानी नारी के धैर्य, सहनशक्ति और एकनिष्ठा जैसे गुणों को व्यक्त करती है । कहानी की रूकमणी एक पागल व्यक्ति की खूबसूरत पत्नी है जिसका संसार में और कोई नहीं है । वह अपने पागल पति के प्रति बुरी तरह समर्पित है । कहानी के अन्त में पागल पति ठिक होकर आता है और अपनी रूकमणी को ढूंढता है । रंगबिरंगी कपडो को बटोरता हुआ वह बार–बार यही कहता है कि रूकिमणी रूठी है । यह रूकमणी को ढूँढता रहता है । कहानी, जैसाकि शीर्षक से स्पष्ट है, एक रोमेन्टिक कहानी है, भीष्मजी की अपनी रचना दृष्टि से अलग एक नयी जमीन पर यह कहानी लिखी गयी है ।

:: नयी हवेली ::

कहानी में लेखक ने नयी बनी हुई सड्क पर सफर करते हुए सड्क के किनारे बसे एक गाँव का चित्रण किया है । चमेली निहायत गरीब लड्की है जो पति के मर जाने के पश्चात् बूढे सास–श्वसुर के आतंक को बर्दाश्त करती है । अपने चाचा के साथ चाय की छोटी सी दुकान खोलती है । आने –जानेवाले ड्राइवरो को चाय पिलाती है । इंजिनियर साहब अपनी पत्नी को नयी हवेली सड्क दिखाने जीप गाडी में वहाँ आ पर्हुचते हैं । नयी सड्क मानव–इतिहास की अनगिनत लीको में से एक लीक है जो अपने आपमें एक महत्ता लिए हुए है । चमेली जैसी लडकियों की परवरिश उसके नाते होती है । कहानी का भावार्थ लेखक ने चमेली के द्वारा व्यक्त किया है कि, ''इतनी फूर्ति तुझमें कहा से आयी, तब वह कहती है ''पेट करवाता है चाचा, सब पेट करवाता है ।''

:: सिर का सदका ::

इस कहानी में पति की दूसरी शादी करा देने वाली और मन ही मन दु:खी होकर भी उसकी खुशी के लिए दूसरी बीवी की सेवा करने वाली स्त्री का चित्रण किया गया है । भारतीय नारी की परंपरागत मानसिकता को उभारती है । नारी–जीवन के यथार्थ को साहनीजी ने आलोचनात्मक ढंग से उभारा है , उसे गौरवान्वित नहीं किया ।

:: कुछ और साल ::

इस कहानी में समय के साथ तेवर बदलती हुई मध्यवर्गीय मानसिकता को उभारा गया है । मधुसूदन का भरापूरा परिवार है । सुप्रिन्टेन्डेन्ट के पद से रिटायर्ड होने पर अकेलापन उसे खलता है । अतीत उसको बार बार तड्पाता है । धन और सत्ता के नशे में वह अपने सहपाठी मित्र शिवशंकर की उपेक्षा करता है । पूंजीवादी व्यवस्था में मनुष्य अपने आपको भूलता जाता है, यहाँ तक कि स्वयं की पत्नी तक का मानसिक शोषण करने से भी हिचकता नहीं है । कहानी में आज के जीवन के यथार्थ के ये कोण उद्घाटित् हुए है ।

:: इमला ::

'इमला' कहानी एक स्कूल मास्टर की कहानी है । सत्ता, पद, पैसे तथा प्रतिष्ठा के आतंक और रूआब को इस कहानी में ग्रामीण शिक्षक के संदर्भ में सामने लाया गया है । गाँव प्रधान के लड्के के द्वारा अपमानित होने पर स्वाभिमानी शिक्षक उसकी शिकायत उसके पिता से करने का निश्चय करके उसके घर पहुँचता है । प्रधान के घर उसके हाथों कोई नई चीज टूट जाती है, आशंका तथा भय की मानसिकता में वह अपनी शिकायत तथा स्वाभिमान को एक ओर रख प्रधान की खुशामद करने लगता है तथा उसके बेटे की देखरेख करते रहने का आश्वासन देकर वापस आ जाता है । सत्ता का रूआब तथा एक सामान्य अध्यापक की रोजी–रोटी के सवाल से जुडी भीरू मानसिकता को कहानी में मनोवैज्ञानिक सूझ के साथ दर्शाया गया है । अपने यथार्थ

सन्दर्भो में भी कहानी प्रामाणिक और सजीव है । मास्टर साहब चौधरी के बिगडे हुए लड्के की शिकायत लेकर गए थे और उसका खयाल रखने का आश्वासन देते हुए लौट आते हैं ।

:: पास–फैल ::

पुरूष प्रधान समाज में नारी अनेक रूपो में शोषित होती है । शोषण का एक रूप वह है जब मध्मवर्गीय घरो में वह नुमाईशकी तरह लड्के तथा उसके घरवालो के सामने इस नाते प्रदर्शित की जाती है कि उसे पसन्द कर लिया जायेगा । शादी की उम्र तक पहुँची लडकियों की, इस नुमाईश के पीछे चुने जाने के पूर्व और नापसन्द किए जाने के उपरान्त लड्की को एक गहरे मनोवैज्ञानिक दबाव तथा मानसिक यातना से गुजरना पड्ता है । उसे लड्केवालों के बेहुदेपन का सामना भी करना पड्ता है । मौजुदा मध्वर्गीय समाज का वह एक कटु यथार्थ है, जिसे लेखक ने पूरी मानवीय संवेदना के साथ चित्रित किया है । लड्की की अग्नि–परीक्षा की यह रूढी और उसके पीछे छीपी मानसिकता लेखक की कठोर आलोचना का लक्ष्य बनी है ।

:: प्रोफेसर ::

कहानी व्यवस्था की शिकार नई पीढी के कुचले अरमानों तथा आकांक्षाओ की कहानी हैं। अधिक कष्ट व्यक्ति की अन्तरंग रूझानो तथा रूचियों को रोंदकर रख देते हैं । जीने की विवशता के आगे अपने सपनों के संसार को अपनी आँखो के सामने चूर–चूर होते देखना ही आज की मध्यमवर्गीय नई पीढी का यथार्थ है । जो प्रोफेसर कभी अपने शिष्य की कलाभिरूचि तथा प्रतिभा की सराहना करते थे, वहीं उसे जमाने के यथार्थ से परिचित कराते हुए सलाह देते है कि वह अपनी माँ को सहारा दे, भले ही इस क्रम में उसकी अपनी कला तथा उसके अपने कलाकार का भविष्य नष्ट हो जाय । आज की विड्म्बनामय स्थितियों से उभरते यथार्थ को ही इस कहानी में प्रस्तुत किया गया है ।

:: कटघरे ::

'कटघरे' कहानी घर–गृहस्थी की कैद में अजकडे आज के मध्यवर्गीय स्त्री–पुरूषों के यथार्थ जीवन की कहानी है, जिसे लेखक ने अतीत की स्मृतियों के माध्यम से कहा है । कहानी नारी के व्यक्तित्व को पुरूष द्वारा विश्लेषित करने वाली कहानी है । डॉ. भगवानदास वर्मा जी कहते है परिवार में कुछ घटनायें घटित होती है, जिनका आधार लेकर पारिवारिक सदस्यों की प्रतिक्रियायें किस प्रकार पारिवारिक आदर्शो के फर्क को सूचित करती है इसका बडा मार्मिक चित्रण करवटे में झलकता है ।

:: अपने – अपने वच्चे ::

यह कहानी एक ऐसी स्त्री की कहानी है, जिसका पति उसे छोड्कर कहीं भाग गया है । चार साल के शरारती–नटखट बेटे निक्कू की वजह से बार–बार उसे नौकरी से निकाला जाता था इस बात का चित्रण किया गया है । घर आकर माया अपने बेटे को पीटती है परन्तु उसके बावजूद बच्चे का नटखटपन नहीं छूटता । एक परित्यकता नारी की विवशता, जीने के लिए उसका संघर्ष तथा साथ ही बेटे के प्रति ममता इन बातों को यथार्थ संदर्भ में यह कहानी उजागर करती है । माया का बेटा निक्कु अपने बाल–सुलभ यथार्थ को लेकर हमारे सामने आता है जो उसकी अपनी माँ के लिए ही समस्या हो, उसके जीवन का सहज यथार्थ है ।

:: गीता सहस्सर नाम ::

गीता सहस्सर नाम कहानी में लेखक ने बुढापे को पुन: याद किया है। जीवन की तीन अवस्थाएँ है – बचपन, यौवन और बुढापा । बुढापा आते ही चारों ओर अन्धकार सा छा जाता है। गुजरे हुए प्रत्येक क्षण बुढे व्यक्ति को अकसर परेशान करते है । कहानी की चाची की घर में सभी उपेक्षा करते है। इसलिए वह किताब में न होने वाले मंत्र पढती है और अपनी मर्जी से उनका अर्थ निकालती है । ऐसा चित्रण साहनीजी ने किया है ।

:: सुनहरी किरण ::

सुनहरी किरण कहानी में भटकती जिन्दगी बसर करनेवाले बन्जारो के समाज का चित्रण है । जिन्दगी की उपरी पर्त पर हमारे क्रिया कलाप है, काम–धन्धे है, जिन पर हम रोजी कमाते है, बच्चे पालते है पर उसकी गहराई में सपने ही सपने है, फिर बाहर लौटकर कोई क्या देखे ? बनजारे जिन्दगी की राह पर चलते चलते थक कर कहीं घर भी बसेरा कर देते है, उनका न अपना घर है, न जमीन, बस चलते ही जाना उनकी नियति है । जहाँ कहीं रूकते है आग की भट्टी जलाते है, लोहा गर्म करते है और उसे हथोडे से पीटते है ।

हथौडा चलानेवाला शीर भी मानो किसी भट्ठी में ही तप रहा है । उसे देखकर लेखक को लगता है कि जैसे वह एक किसी विशाल क्षितिज के आगे खडा हथौडा चला रहा है ।

कहानी के अन्त में बन्जारों का गुजार काफिला अपने अवशेष छोड जाता है, जो पाठक को उनकी जिन्दगी के यथार्थ में झाँकने की प्रेरणा देता है । लेखक स्वयं कहानी के अन्त में कहता है कि यथार्थ नामकी सचमुच कोई चीज नहीं । यह तो अपनी अपनी नजर की बात है । जिस चीत पर आँक टि जाए उसे हम यथार्थ मानने लगते है ।

:: साये ::

कहानी संग्रह की अंतिम कहानी 'साये' भी अपने आपमें बडी महत्वपूर्ण है । कहानी में मुख्य पात्र तीन है । पापा – मम्मी एवम् पप्पु । पति–पत्नी के आपसी मन–मुटाव का बच्चो पर गहरा असर होता है । कहानी में पप्पु की समझ में नहीं आता मम्मी–पापा आखिर क्यों झगडते रहते हैं ? फूल सा मासूम पप्पु माँ के जन्म दिन पर छोटा सा जंगली फूलों का गुच्छा दिखाते हुए अपने पापा से कहता है, ''तुम दो पापा'' । पति–पत्नी के आपनी संबंधो के बीच पप्पू ही एक ऐसी कडी है, जो उन्हें टूटने नहीं देती । दाम्पत्य जीवन के मधुर संबंध को टूटने से बनाने का कार्य पप्पुकी मासूमियत करती है । कहानी में पप्पू का चरित्र उल्लेखनीय है । मध्यवर्गीय परिवारो में पति–पत्नी के बीच के तनावों को लेखक ने गहरे जाकर पकडा और उभारा है।

साहनीजी के इस संग्रह को देखने के पश्चात यह कहा जा सकता है किल उनकी कहानियाँ काल के किसी धरातल पर जाकर रूकती नहीं थी। निरंतर प्रवाहित इतिहासधारा बनकर हमारे सामने प्रकट होती रही। साहनीजी कहानियों में स्वयं हमसे ही हमारा आत्मीय साक्षात्कार कराती नजर आती है । कहानियां में लगातार अमानवीय होती जा रही सामाजिक परिस्थितियों के खिलाफ संघर्ष, क्षोभ और गुस्सा प्रगट करने तक ही सीमित नहीं रहती उतनी उडान भरी हुई है ।

२.२.१.१.४ : पटरियाँ

प्रस्तुत कहानी –संग्रह को भीष्मजीने उखा, प्रभा तथा अशोक के नाम समर्पित किया है। कहानी संग्रह का प्रकाशन काल १९७३ है । जिसकी प्रथम कहानी पटरियाँ ही है । जिसके संग्रह के नामकरण के लिए इस कहानी को ही चुना गया है । साहनी जी को वैसे अपनी सभी कहानियाँ प्रिय थी, लेकिन यह कहानी नामकरण का आधार बनती है, इससे उस कहानी की विशेषता षृष्टव्य होती है ।

'पटरियाँ' कहानी आर्थिक विषमता से जूझते हुए एक कुण्ठाग्रस्त मध्यवर्गीय पात्र की कहानी है । जीवन में उसे अपमान, तिरस्कार और निराशा के सिवा कुछ नहीं मिलता, इस तथ्य को बतलाता है । 'पटरियाँ' मानवीय विवशताओं, मजबूरियों तथा आर्थिक विषमताओ की चक्की में पिसनेवाले हीन ग्रंथि के शिकार व्यक्ति की कहानी है । केशोराम पढा–लिखा व्यक्ति है, फिर भी वह बेरोजगार है, आर्थिक विषमता से जूझते हुए कुण्ठाग्रस्त हो जाता है । वह घर–बाहर से,पत्नी से, ओफिस से यहाँ तक कि अपने जीवन से कटा हुआ मध्यवर्गीय व्यक्ति है । वह सोचता है, ''सबसे बडी चीज दुनिया में पैसा है, पोजीशन है, बाकी सब ढकोसला है । सब बकवास है । ताकत और पैसा और रोब–दाब, इनसे बढकर कोई चीज दुनिया में नहीं है । समग्र कहानी मध्यवर्गीय व्यक्ति की मानसिक पीडा की परतों को खोलती जाती है ।''[६] समकालीन यथार्थ के चितेरे साहनीजी ने प्रस्तुत कहानी में मध्यवर्गी के जीवन की रिक्तता को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है ।

:: अमृतसर आ गया ::

राजनीतिक विषय पर लिखी गई यह अत्यन्त सशक्त कहानी है जिसमें विभाजन से उत्पन्न विभीषिका का बहुत ही बेबाक वर्णन किया है । पाकिस्तान बनाए जाने का ऐलान किया जा चुका है । चारों ओर मार–काट बनी लगी है । भयभीत लोगों को गाडी के ड्ब्बों में चढने नहीं दिया जाता । ड्ब्बो में भी लोक एक–दूसरे से ड्रे–सहमे बैठे है । गाडी में चढनेवालों को जिस बेरहमी से मौत के घाट उतारा जाता है, कहानी में उसका सच्चा कच्चा चिट्ठा पढते–पढते स्वयं पाठक का कलेजा काँप उठता है ।''[७] लूट–पाट, आग–जनी और खून खराबे का अत्यन्त यथार्थ, स्वाभाविक एवं मर्मस्पर्शी वर्णन किया गया है । इस तरह साहनीजी ने विभाजन के समय के खूनी माहौल का, बदलते हुए भूगोल के समानान्तर हिन्दुओं, सिक्खै और पठानो की दहशत और दुश्मनी की हत्यारी मनोवृत्तियों का बड मार्मिक और सटीक चित्रण प्रस्तुत है ।

:: ललक ::

'ललक' कहानी में बचपन के अभाव से पैदा होनेवाले वैमनस्य का चित्रण हुआ है । ''आर्थिक विषमता छोटे बच्चों में हिंसक प्रवृत्ति को जगाती है ।''[८] हक बच्चा खेल–खेल में गरीब और बूढे व्यक्ति को तबाह कर देता है । बच्चे का खेल बुढे की मौत का कारण बन जाता है । इसी बात को इस कहानी में बतलाया गया है ।

:: नया मकान ::

नया मकान कहानी यथार्थवाद के उन पक्षधरो का प्रतिबिंब है जो बडे से बडे सिद्धांत का खोल पहने निहायत अवसरवादिता तथा सुविधा का जीवन जीते है और ऊँची बाते करते हुए भी घटिया स्तर की दुरभिसंधियाँ करते है । एक मार्कसवादी जब व्यवहारमें बुर्जुआजी का हिस्सा बन जाता है तब कितना खतरनाक, चालाक और कमीना हो जाता है, उसे इस कहानी में दिखाया गया है । ''भीष्मजीने जिस प्रकार धर्म का पर्दाफास किया है, उसी प्रका बुर्जुआ चरित्र को भी उधेड है और उन्हें भी नंगा किया है।''[९] कहानी के अंत में विमला अपने पति को मकान के

इन्कालाबी कमरे में धकेलती और बंद दरवाजे के पीछे से गीत की यह पंक्तियाँ गिरजा गा रहा था, ''यह जंग है.... जंग ए ... आजादी । एक क्रान्तिकारी की दयनीय मन:स्थिति का प्रभावशाली ढंग से यहाँ चित्रण है ।

:: पैरो के निशान ::

इस कहानी में अस्पताल का वातावरण चित्रित किया गया है । रोग से भी अधिक त्रास के साथ कमरे में रोगी आरपार डोल रहे थे । सभी लोग थे, अपने–अपने रोग से जूझते अपनी–अपनी आशा से चिपके हुए सभी त्रस्त थे । कमरे के ऐन बीचोबीच पैरों के निशान थे । पैरो के निशान देखकर बच्चा हुनक उठता है, फिर कर्मचारी की ओर देखकर मुस्कुराने लगता है । अपना पैर कमरे के पदचिह्नो पर लगाने के लिए उठाता है । कभी वह गिरता है कभी उठता है । वह बार–बार अपने लड्खडाते पैर पदचिह्नो पर रखने के लिए उठाता है । बच्चे के आने से कमरे में सुख का संगीत बज उठा । सभी लोग इस लय पर चलनेवाली वाललीला को देखे जा रहे थे ।

:: अभी ते मैं जवान हूँ ::

यह कहानी वेश्याओं के जीवन पर आधारित है । वेश्याओं के जीवन का यथार्थ इस कहानी में उभारा गया है । नर–नारी के यौन–संबंधो पर भी अर्थ का कितना गहरा दबाव है, इसका एहसास यह कहानी कराती है । प्रस्तुत कहानी गरीबी की समस्या को भी उद्घाटित करती है । गरीबी और अभाव की स्थितियाँ अनेक है । सामान्य स्थितियाँ निरन्तर दारिद्र्यपूर्ण जीवन–यापन करते मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग की विवशताओं तथा उनके टूटते सपनों का उद्घाटन करती हैं ।

:: रास्ता ::

'रास्ता' कहानी जीवन की टेढी–मेढी, ऊँची–नीची, ऊबड–खाबड ढलान से गुजरती हुई प्रणय कहानी है । यह गोविन्द, माँ और ब्राह्मण युवककी प्रेम कहानी है । इन्सान रास्ता चुनता

ही कहाँ है, वह तो केवल चलता है । जिन्दगी एक खूबसूरत सफर है । लेखक ने कहानी के माध्यम से अपनी जिज्ञासा व्यक्त की है । क्या जिन्दगी में घटनाएँ किसी क्रम से घटती हैं । पहले क्या हुआ और बाद में क्या हुआ, यह सब असंगत नहीं है ? जीवन की घटनाएँ काठ के टेढे–मेढे ढकडो की भांति बिखरी पडी है । ये पहले और पिछले क्रम में नहीं जुटती, पर ये जुटती जरूर है । धीरे–धीरे प्रत्येक व्यक्ति का जीवन एक स्वर–रचना का रूप ग्रहण करने लगता है और उसके चरित्र का मूल स्वर उस रचना का मूल स्वर बनता चला जाता है । सभी स्वरलहरियाँ इसी मूल स्वर में फूटती हैं । कभी अन्धेरों की,कभी हँसी की, तो कभी चीत्कार की । कहानी में जीवन किस राह से गुजरता है, वह किस मोड पर महत्त्वपूर्ण प्रश्नो से जुड जाता है । इस बात को हमारे सामने रखने का प्रयास किया गया है ।

:: इन्द्रजाल ::

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने राजकमल नामक चरित्र के माध्यम से भयाक्रान्त स्थिति के विविध स्तरों का उद्घाटन किया है । जिन्दगी से जरा सा भी मोह न होने की डींगे मारनेवाला रामलाल बीमार पडने के वक्त जिन्दगी की अहमियत को समझता है । उस वक्त जिन्दगी के किमती पल वह गवां चुका था, वह जिन्दगी को पकडे रहने में असफल प्रयास करता है । इस कहानी में मृत्युशैया पर खडे मनुष्य की जिन्दगी के प्रति तडप को सामने रखा है ।

:: दोरे ::

'दोरे' कहानी एक शादी शुदा इन्सान के साथ प्यार कर उसके लिए बारह साल शादी किये बिना रहने वाली अर्चना की कहानी है । जो प्रेम संबंधो को लेकर निर्मित हुई है । प्रेम का कोई समान रूप व्यंजित नहीं हुआ है वरन इसमें मन:स्थितियों के तनाव, जटिलता, द्वन्द्व, नैतिकता और भावना की टकराहट बदले हुए संदर्भ में एक ट्रेजिक प्रभाव के साथ हुई है । नौकरी–पेशेवर औरतें ऐसी है जो बाल–बच्चों के होते हुए भी व्यक्तिगत स्तर पर एक गहरा सूनापन मेहसूस करती है, और किसी दिन अपने दफतर के हमाम और सहेलियों के संग अपना

सूनापन काटना चाहती है । ''कहानी में अर्चना के प्रेम को, गृहलक्ष्मी के पत्नीधर्म को और गिरीश की मानसिकता का चित्रित किया गया है ।''[१०] साथ ही पति–पत्नी के मन–मुटाव को मिटाने का प्रयास करने वाला बिट्टू भी शामिल है । कहानी समकालीन सामाजिक यथार्थ को उजागर करती है ।

:: भगोडा ::

भगौडा कहानी में मनुष्य का सत्य मनुष्य के ही हृदय में खोजने का प्रयास है । लेखक ने एक युवा साधक की साधना को केन्द्र में रखकर इस साधना की असामाजिकता को उजागर किया है । यह कहानी जीवन से पलायन के विरोध की कहानी है । एक व्यक्ति एकान्त साधना के लिए संसार को त्यागकर एक निर्जन पहाडी स्थान पर जाता है, किंतु बहुत प्रयत्न के बाद भी वह अपने को साधना में एकाग्र नहीं कर पाता। इस तरह साहनीजी ने संसार से निवृत्ति मार्ग के मार्ग को नकारते हुए सांसारिक जीवन को ही सच्चा जीवन बतलाया है।

:: तस्वीर ::

कहानी संग्रह की अगली कहानी है, ''तस्वीर''। ''यह कहानी एक ऐसी नारी की विडम्बनापूर्ण करूणा को सामने रखती है जो पति के देहान्त के पश्चात् श्वसुर की खिडकियों एवं उपेक्षा की शिकार होती है ।''[११] उसके खुद के भी बच्चे उसकी उपेक्षा करने में पीछे नहीं रहते। अर्थ के अभाव में पारिवारिक जीवन टूटने लगता है । प्रस्तुत कहानी में नारी सहज वर्तन को सामने रखा गया है । ''नारी की भीतरी पीडा को पुरूष प्रधान समाज के सामने कलात्मक ढंग से रखा गया है ।''[१२] प्रतिदिन नारी की दयनीय स्थिति और नारी शोषण की गाथा को प्रस्तुत कहानी में चित्रित किया गया है ।

:: मौका परस्त ::

यह कहानी वर्तमान नेताओं की स्वार्थवृत्ति को सामने लाती है। जब एक अर्थी तक को ये नेता चुनावप्रचार का साधन बनाते है तब ऐसे अवसरवादी नेताओं की क्रुरता और अमानवीयता

पर पाठक का हृदय छटपटाए बिना नहीं रहता। शंभु पार्टी का एक सक्रिय सदस्य था, जिसकी किसी दुर्घटना में अचानक मृत्यु हो जाती है। चुनाव लड़नेवालों का सिर्फ अपने चोट की ही चिन्ता रहती है। उनके लिए एक आदमी की जिन्दगी का कोई मोल नहीं है। जीते जी शंभू की परवाह किसी को न थी, परन्तु मरने के पश्चात् उसकी अर्थी का राजनीतिक उपयोग हरनारायण की पार्टी का प्रचार प्रसार करने के लिए किया जाता है। शंभु की मृत्यु का फायदा हरनारायण की पार्टीवालो ने इस प्रकार उठाया, माना उसकी मृत्यु उनके लिए मातम न होकर वरदान बन गई हो। शुरू और अन्त में बूचड़खाने के प्रसंग की व्यंजना कहानी को संवेदना के अनेक अर्थ–स्तरो पर खोलती आगे बढती है।

:: जखम ::

इस संग्रह की अगली कहानी 'जखम' बुजुर्गो की उपेक्षा पर लिखी कहानी है जिसमें एक दु:खी आदमी की विवशता का चित्रण किया गया है। प्रस्तुत कहानी में लेखक की छेंट रेलयात्रा में एक व्यक्ति से होती है जिससे लेखक को घृणा होती है। सहयात्री के विचार एवम् व्यवहार को देखकर लेखक मन ही मन सोचता है कि जब आदमी इस उम्र में समाज को पटरी पर बैठाने निकला है उसके हृदय में कहीं गहरा जखम जरूर होगा। ऐसे लोग दुनिया को धोखा ही देते है, सबसे बढकर अपने को धोखा देते है। यही आदमी लेखक को कहानी के अन्त में चुभनेवाला जखम यह कहते हुए दे जाता है कि, ''बूढो को जिन्दगी से किनारा कर लेना चाहिए।'' फिर धीरे से कहता है, ''मैं तो दो तीन बरस में जाऊंगा, पर तुम..... तुम्हारा क्या होगा ।''[१३] इस कहानी का विषयवस्तु समय की चोट के भीतरी जखमो से भरा हुआ है। कहानी अत्यंग रोचक हैं।

:: ढौलक ::

कहानी संग्रह की एक अन्य कहानी 'ढौलक' है। प्रस्तुत कहानी में एक पढे लिखे व्यक्ति की परंपरागत सामाजिक रूढियों के प्रति आक्रोश की भावना व्यक्त की गयी है। रामदयाल दकियानुसी से नफरत करता है। परंपरागत रीतिरस्मों में भी उसे बेहद चिढ है। शादी–व्याह में

औरतों का ढोलक बजाकर गीत गाना, वर का सज धजकर घौडी पर चढना और भी अन्य रस्मो में उसे ना ही दिलचस्पी है और ना उसके लिए कोई मायने रखती है। चाचा के तथा बुजुर्गो के लाख समझाने पर भी वह अपने खुद के विवाह में घोडी पर चढकर विदुषक की भाँति नहीं दिखना चाहता। अन्ततः अपने एक वकील मित्र के समझाने पर मान जाता है, खास तौर से तब जब उसके वकील मित्र दो अंग्रेज मेमो को उसके विवाह में लाते है और उससे कहते है कि ''वे भारतीय विवाह की रीतिरस्मो को देखना चाहती हैं।''[१४] कहानी में एक प्रकार से व्यंग्य भी जुडा हुआ है जो परंपरागत संस्कारो की ओर इशारा करता है।

२.२.१.१.५ : वाऽचू

भीष्म साहनीजी का पाँचवाँ कहानी – संग्रह 'वाऽचू' है जो सन १६७८ में प्रकाशित हुआ। उनका यह कहानी – संग्रह सबसे अधिक उल्लेखनिय है। वाऽचू कहानी का नायक वाऽचू चीन से आया है, जो भारत दे बौद्ध धर्म, उसके तत्त्वज्ञान से प्रभावित होकर यहीं रहने लगा है। बौद्ध धर्म के बारे में जानकारी हासिल करना उसकी एक सनक कही जा सकती है। इसके लिए वह कई तकलीफें उठाता है। वाऽचू कहानी संग्रह की कहानीयों में एक ओर समाप्य का मध्यवर्गीय तपका है तो दूसरी ओर उच्चवर्गीय लोग और उनका परिवार भी है। साथ ही इन कहानियों में निम्नवर्गीय पात्रों का भी चित्रण किया गया है। प्रस्तुत कहानी संग्रह की एक ओर विशेषता यह भी है कि, 'लेखक ने इस कहानी संग्रह को अपने बेटे वरूण को समर्पित किया है।''[१५]

इस कहानी में ग्यारह कहानियाँ संकलित हैं । जिसके नाम इस प्रकार हैं–

'ओ हरामजादे', 'गलमुच्छे', 'सागमीट', 'खण्ड्हर', 'पिकनीक', 'वाऽचू', 'मालिक का बंदा','अहं ब्रह्मास्मि', 'राधा–अनुराधा', 'खूँदे','त्रास'

२.२.१.१.६ : शोभायात्रा

भीष्मजी का यह छठा कहानी संकलन है । जो सन् १९९१ में प्रकाशित किया गया था । धर्म के नाम पर होने वाले खिलवाड और अमानवीय कृत्य का यथार्थ चित्रण करने वाली

'शोभायात्रा' कहानी राजाशाही वातावरण को चित्रित करती हुई आधुनिक युग की विडम्बना को चरितार्थ करती है । ''बलि की शोभायात्रा करते हुए लेखक ने धार्मिक आडंबर एवं पाखंड को बेनकाब किया है । प्रस्तुत कहानी संग्रह की खास विशेषता यह है कि, 'यह कहानीसंग्रह लेखक ने अपने परम मित्र सोमसुन्दरम् को समर्पित किया है ।''[१६] इस कहानी संग्रह में १३ कहानियाँ है । जिनके नाम इस प्रकार है –

'निमित्त', 'खिलौने', 'मेड–इन–इटली','भटकाव', 'फैसलां', 'रामचंदानी', 'शोभायात्रा', 'धरोहर', 'लीला–नन्दलाल की', 'बनारस', 'भेट', 'सड्कपर'।

२.२.१.१.७ : निशाचर

साहनीजी का महत्त्वपूर्ण कहानी संग्रह 'निशाचर' है । 'निशाचर' सन् १९८३ में प्रकाशित हुआ था । इस कहानी में साहनीजी के समाज के प्रति विचारों को सामने रखा है । समाज के निम्न और अपेक्षित वर्ग के अपने जीवन – संघर्षों को केन्द्र में रखा है । ''इन्सानी रिश्तों के भीतर छिपी भावुकता, संवेदनशीलता, मनुष्य की सपने देखने की वृत्ति, साम्प्रदायिकता, इतिहास आदि अलग–अलग विषयों को कहानियों में स्थान दिया गया है ।''[१७] निशाचर कहानी रात के वक्त कागज बटोरने वाली औरतों की कहानी है । ''जमादार का ड्र उन्हें इतना आतंकित करता है कि वे उसके आने से पहले सब कुछ पा लेना चाहती है ।''[१८] इसी कहानी संग्रह में १४ कहानियाँ है जिसमें,

'चाचा मंगलसेन', 'कण्ठहार', 'सलमा आया', 'निशाचर', 'संभल के बाबू', 'मुर्ग–मुसल्लम', 'दिवा–स्वप्न', 'जहूर बख्श', 'विकल्प', 'पोखर', 'सरदारनी', 'नदामत', 'अतीत के स्वर', 'दहलीज' ।

२.२.१.१.८ : पाली

इस संग्रह की शीर्षक कहानी पाली सन् १९८९ में प्रकाशित हुई थी । 'पाली' भारत – पाकिस्तान विभाजन की कहानी है । जिसमें विभाजन के समय खोये भारतीय बच्चे को मुसलमान

बनाये जाने और फिर उसके वापस मिलने पर उसे हिन्दू बनाये जाने का चित्रण है । इस कहानी में बाल–मनोविज्ञान का चित्रण किया गया है । अपूर्णानंद जी ठीक ही लिखते है – ''पाली धर्म से मानवीय संवेदना के विस्यापन की कहानी है ।''[१९] इसीलिए वह सार्थक भी बन पडी है ।'द इस संग्रह में विभिन्न मोडो से गुजरती हुई १४ कहानियाँ संकलित है, जिनके नाम निम्नलिखित है;

'पाली', 'प्रदुर्भाव', 'झुटपुटा', 'मरने से पहले', 'सेमिनार', 'देवेन', 'आवाजे', 'खुश्बू', 'नौसिखुआ', 'झूमर', 'चोरी' ।

२.२.१.१.९ : प्रतिनिधि कहानियाँ

भीष्म साहनीजी के इस कहानी संग्रह में कुल तेरह कहानयिाँ संकलित है। यह कहानी–संग्रह सन् १९९३ में प्रकाशित किया गया था। साहनीजी द्वारा संकलित बहुचर्चित्त कहानियों को इस संग्रह में स्थान मिल पाया है जिनमें;

'गंगो का जाया', 'चीफ की दावत', 'खून का रिश्ता', 'माता विमाता', 'यादे', 'कुछ और साल', 'अमृतसर आ गया है', 'ओ हरामजादे' , 'साग–मीट', 'त्रास', 'वाऽचू' , 'लीला नंदलाल की', 'चाचा मंगलसेन' ।

यह सारी कहानियाँ साहनीजी ने अपने विभिन्न कहानी संग्रह में से चुनकर वापिस संकलित की है ।

२.२.१.१.१० : मेरी प्रिय कहानियाँ

साहनीजी द्वारा संपादित इस कहानी संकलन को भी सन् १९९३ में प्रकाशित किया गया था । जिसमें १० कहानियों का चयन किया गया था । इस संकलन की कहानी को साहनीजी ने स्वयं अपनी प्रिय कहानी में स्थान दिया था । ''संग्रह के आरंभ् में साहनीजी ने 'दो शब्द' के अन्तर्गत ये कहानियाँ उन्हें क्यों प्रिय है, इसका कारण बताया था।''[२०] जिसमें संग्रहित कहानियों में;

'चीफ की दावत', 'समाधी भाई रामसिंह', 'माता विमाता', 'गंगो का जाया' , 'सिफारिशी चिट्ठी', 'अमृतसर आ गया है', 'साग–मीट', 'लीला नंदलाल की', 'वाइचू', 'खिलौने'।

ये कहानियाँ साहनीजी पसंदित कहानियों में है । जिनमें कई कहानी प्रतिनिधि कहानियों में भी शामिल हैं।

२.२.१.१.११ : चर्चित कहानियाँ

साहनीजी द्वारा संपादित यह कहानी – संग्रह सन् १९९७ में प्रकाशित हुआ था । जिनमें १६ कहानियाँ को स्थान दिया गया था । यह वे सोलह कहानियाँ है जो लोगो में चर्चित रही है । संग्रह के आरम्भ में उन्होंने 'मेरी बात' के अन्तर्गत इन कहानियों के बारे में लिखा है । यह कहानियाँ लोकचाहन से जुडी हुई थी । जिनके नाम है;

'तस्वीर', 'मेड इन इटली', 'धरोहर', 'खिलौने', 'मरने से पहले', 'पिकनिक', 'मकबरा शाह शेरअली', 'इन्द्रजाल', 'मालिक का बंदा', 'निमित्त', 'खून का रिश्ता', 'मौकापरस्त', 'त्रास', 'शोभायात्रा', 'संभल के बाबू', 'प्रादुर्भाव' ।

२.२.१.१.१२ : डायन

डायन में कहानियों की संख्या ११ है । 'डायन' सच प्रकाशित कहानी संग्रह है । इन कहानी में सामाजिक समस्याओं का चित्रण, यथार्थ चेतना, व्यापक अनुभव, सही वैचारिकता और इतिहास बोध विशेषताओं के साथ सन् १९९८ में प्रकाशित हुआ था ।

'डायन' शीर्षक कहानी इस संग्रह की प्रथम कहानी । जिसमें अंधश्रद्धा का चित्रण किया गया है । डायन की कल्पना प्राचीन काल से मानी जाती है । आज भी उसका लगभग वहीं रूप है, समय के बदभाव में भी इस बात पर परिवर्तन नहीं आया है । संग्रह की अन्य कहानियों में;

'वीरो', 'कथा समय', 'गेरैया', 'मकबरा शाह शेर अली', 'चेहरे', 'मुझे मेरे घर छोड आओ', 'रफतार', ''पर यह क्या', 'वापसी – ब – वापसी' 'राहत' ।

तात्पर्य यह नीकाला जा सकता है कि यह नवीनतम् कहानी संग्रह जैसी विशेषता अन्य कहानी संग्रहो में पाना कठिन है । मानवी, मूल्य जीवन की कोमलता का चित्रण, सहज, कथा रस से यह कहानी संग्रह भरा पडा है ।

२.२.१.१.१३ : निष्कर्ष

संकलन की समग्र कहानी में साहनीजी की सजग दृष्टि झलकती है । साहनीजी सामाजिक सरोकार के प्रबुद्ध लेखक है । जिन्दगी की यथार्थ घटनाएँ तथा प्रसंग ही उनकी कहानियों के विषय बनते हैं, जो कहीं न कही एक गहरी मानवीय संवेदना से जुडे होते है, या फिर उनमें जीवन के यथार्थ को उसके प्रतिनिधि रूप में उजागर करने की क्षमता होती है ।

२.२.१.२ : उपन्यास

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी भीष्म साहनी ने जिस प्रकार से उत्कृष्ट कहानियाँ लिखी उसी प्रकार उत्कृष्ट उपन्यास भी लिखे । कहानीकार साहनी और उपन्यासकार साहनी में कौन श्रेष्ठ है यह कहना आसान नहीं है । पर इतना अवश्य है कि, 'तमस' जैसे कालजयी विख्यात उपन्यास के लेखक में साहनीजी को भूला पाना असंभव है ।''[२१] हिन्दी उपन्यास साहित्य की समृद्धि में भीष्मजी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर हिन्दी उपन्यास साहित्य को ऊँचा उठाने में अपना योगदान दिया है । उनकी रचनामें मानवता को मूल्यवान बनाया गया है । उनके उपन्यास साहित्य का विस्तार व्यापक है । साहनीजी ने कहीं लोगो को प्रदर्शन के रूप में नहीं लिया बल्कि उनके जीवन की पीडा को व्यक्त किया है । उनके ७ उपन्यास की संक्षिप्त चर्चा निम्नलिखित हैं ।

:: झरोखे ::

सन् १९६७ में प्रकाशित यह साहनीजी का पहला आत्मकथात्मक उपन्यास है । इस उपन्यासमें भीष्म साहनीजी ने जिस बालक के बचपन से लेकर जवानी तक की घटनाओं का वर्णन किया है, वह खुद साहनीजी ही हैं, यह समजने में देर नहीं लगती । प्रस्तुत कृति में लेखक

ने आर्यसमाजी संस्कारो की सीमायें, उपदेश और आचरण के अन्तर्विरोध सूक्ष्म रूप में चित्रित किये हैं। धार्मिक आडम्बरों, मिथ्या आदर्शों, झूठे सिद्धांतो और रूठ परिपाटियों के विरूद्ध एक असाम्प्रदायिक सामाजिक दृष्टिकोण की खोज की गई है। उपन्यास का मध्यवर्गीय हिन्दू परिवार आर्यसमाजी है । प्रत्येक सदस्य ऐसे वातावरण में जीता है जहाँ संसार बचपन के रागात्मक संबंधो को तोडने का प्रयास किया जाता है। माता–पिता द्वारा बच्चो को दी जाने वाली शिक्षा का वर्णन है। सभी नैतिक बन्धनो में बंधे है। जिन पर कदम–कदम पर हँसना भी आता है और अनुशासनबद्धता की झलक भी मिलती है । परिवार जिस मोहल्ले में बसता है वहाँ हिन्दू मुसलमान साथ में रहते है। दोनो में आपस में कैसी घृणा की भावना घुस गई है, वह बतलाया है। जब मुसलमान अपने घर में बकरी भूनता है तो हिन्दु परिवार अपनी शुद्धि के लिए हवन करता है पुरी तरह से जीवन की मनोविश्लेषणात्मकता को सामने रखा गया है। साथ ही साहनीजी की सूक्ष्म अवलोकन शक्ति के दर्शन भी होते है मनुष्य के कुण्ठामुक्त होते की सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण किया गया है। इस प्रकार प्रथम उपन्यास में ही साहनीजी ने अपने अतीत को किसी झरोखें में झाँककर लिख दिया है। उनके बचपन की यादे और अतीत को हमारे सामने स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया है।

:: कड्यिाँ ::

साहनीजी का कड्यिाँ उपन्यास सन् १९७० में प्रकाशित हुआ था। इस उपपन्यास में विवाह सम्बन्धो के बिखराव पर खडे दम्पति की दास्ता है। जिनका केन्द्र मध्यवर्गीय परिवार है। पति–पत्नी के आपसी टूटते सम्बन्ध की उभरती समस्या का प्रभावशाली चित्रण इस उपन्यास में है। उपन्यास का मुख्य पात्र महेन्द्र आपसी मनमुटाव से पत्नी प्रमिला को त्याग कर सुषमा से प्यार करता है। सुषमा तरफी की लालच में डिप्टी डायरेकटर से प्यार करती है। प्रमिला अपने दाम्पत्य जीवन की कडी को जोडने के लिए महेन्द्र से सुलह करवाने को आती है। तभी गर्भधारण कर लेती है । स्वार्थी महेन्द्र बच्चे को अपनाने से इन्कार कर देता है । प्रमिला पागल हो जाती है और उसे पागलों के अस्पताल में छेजा जाता है । बच्चे को जन्म देने के बाद और दवाईयों से वह

ठीक हो जाती है । वह दवाइयों की दुकान खोलती है । फिर भी अपने पति को सुधारने का प्रयास करती है । महेन्द्र के तब भी न समझने पर सम्बन्ध तोड्कर स्वतंत्रता से जीने लगती है ।

साहनीजी ने समाजकी गिरती नैतिकता का तो पर्दाफाश किया है साथ ही महानगरीय जीवन की विसंगतियों को भी उभारा है ।

:: तमस ::

साहनीजी का ख्यातनाम उपन्यास तमस सन् १९७३ में प्रकाशित किया गया है । जिसमें देश विभाजन की त्रासदी समस्या को केन्द्र में रखा गया है । ''भारत विभाजन के समय की साम्प्रदायिक विविखिका, रक्तपात, हिंसा और उन्माद के साथ ब्रिटिश उपनिवेशवादी षड्यंत्रो और साम्राज्यवादी नीतियों के ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में 'तमस' को देखा जा सकता है।''[२२] दो खण्डो में विभाजित इस उपन्यास के आरंभ में 'नत्थू चमार' सुअर को मार देता है और मुरादअली के आदेश पर मस्जिद के सामने फेक आता है । सामने मुसलमान इस बात का बदला लेने के लिए गाय की हत्या कर देते है । हिन्दु और मुसलमान सम्प्रदाय एक-दूसरें की हत्या और लूटमार में जुट जाते हैं । साम्प्रदायिक विवाद सामने आ जाता है । दूसरे खंड में इस लडाइ से त्रस्त १०३ गाँव, जलकर खाक हो गये इसका चित्रण किया है । धर्म के नाम पर किए जानेवाले अत्याचार के माध्यम से अनेक घटनाओं का निरूपण किया गया है साहनीजी का यह उपन्यास हिन्दु-मुस्लिम साम्प्रदायिक वैमनस्य का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है ।

:: बसंती ::

साहनीजी का चतुर्थ उपन्यास बसंती सन् १९८० में प्रकाशित हुआ है। निम्नवर्गीय जीवन का अत्यंत यथार्थ अंकन करनेवाला अलग ही परिवेश वाला यह उपन्यास है। अगले सभी उपन्यास में 'बसंती' का स्थान अलग है। दिल्ली में पडोसी प्रांतो से जो लोग मजदूरी करने आते है उनके लिए जो बस्ती बनाई जाती है। उन्ही बस्ती में रमेश नगर का निर्माण करने के लिए जो बस्ती बसाई गई उसी बस्ती के चौधरी की बेटी बसंती है। बसंती की उम्र १३-१४ साल है। जो

रमेश–नगर के घरो में काम करने जाती है। आपत्ति से कभी डरती नही और हँसती–चहकती काम करने वाली है। उसकी बस्ती उजाडी जाती है। वह माँ–बाप से बिछड जाती है। गर्भवती अवस्था में पति दीनू बसंती को अपने मित्र वरडू को बेच देता है। उसकी शादी बुलाकी जैसे लंगडे से हो जाती है फिर भी वह विचलित नहीं होती। जब दीनू सौत लेकर वापस घर आता है, अंत में उसका तंदूर ताड दिया जाता है। मनुष्य के निरंतर संघर्षो को यहाँ प्रस्तुत किया है। साथ यह भी बताया गया है कि, ''निरंतर संघर्षो से मनुष्य ऊब जाता है। वह जीवन को व्यापक दृष्टि से देखने लगता है, उस पर हंसी आती है। यही स्थिति इस उपन्यास में बसंती की हो गई है।''(२३)

यह सामान्य उपन्यास होते हुए भी अलग प्रकार के उपन्यास में रखा जानेवाला है ।

:: मय्यादास की माडी ::

साहनीजी के महत्वपूर्ण उपन्यासो में गिना जानेवाला यह उपन्यास सन् १९८८ में प्रकाशित किया गया था । इस उपन्यास को साहनीजी ने तीन खंडो में विभाजित करके लिखा है। उपन्यास में चार पीढियों के इतिहास को प्रस्तुत करते हुए युगीन सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थितियों का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण किया है। 'मय्यादास की गाडी' मानवीय विकास की गाथा है। उपन्यास का प्रारंभ धूर्त, पाखंडी धनपतराय से होता है और अंत हुकूमतराय के साथ समाप्त होता है। ईमानदार मय्यादास कर्तव्य निष्ठ, राष्ट्रप्रेमी है। धनपतराय मय्यादास का सामान गाडी से बाहर फिकवा देता है। तब मप्यादास असहाय हो जाता है। जीवनसंघर्ष करने वाला मय्यादास असफल और निराशा के गर्त में डूब जाता है। धनपतराय के व्यग्यबाण ही मप्यादास की मौत का कारण बनती है। इस उपन्यास में साहनीजी ने बताया है कि धूर्त एवं कुटिल नीतियों वाले अंग्रेज, खालसा सरकार के भ्रष्ट सेनापति जहाँ हो वहाँ लेखराज जैसे राष्ट्रभक्त और समर्पित सैनिक किस प्रकार राज्य की रक्षा कर सके। यहाँ पर सिकरव अमलदारी के ध्वस्त होने के कारण स्पष्ट बतलाये है। इस तरह मय्यादास की गाडी सामन्तवाद की ढपोरशंखिया शान के बनने बिगडने की कहानी है। पूंजी के विस्तार और छल की दास्ता है। देश

भक्ति के ढांढ भारते जब्बे और पीढ में धोंपे छुरे की कहानी है। औरत के सुलगते दर्द, गहरे अंधकार की कथा है।

:: कुंतो ::

भीष्म जी का छठ्ठा उपन्यास 'कुंतो' सन् १९९३ में प्रकाशित हुआ। इसमें साहनीजी ने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक परिवतर्तित स्थितियों का आधुनिकता के संदर्भ में मार्मिक विवेचन किया है। कुंतो में अत्यन्त सामान्य और सीधे–सादे कथानक को स्थान मिला गया है । इस उपन्यास के केन्द्र स्थान में जयदेव, कुंतो, गिरीश और सुषमा को लिया गया है । कुतों के बडे भाई 'प्रोफेसरसाब' मध्यम मार्ग चुनने वाले है । वे बाहरी रूप में आधुनिक और अंदरूनी रूढिवादी है । इसी वजह से सुषमा को चाहने वाले जयदेव से कुंतो की शादी कर स्वयं भी दु:खी होते है और कुंतो का जीवन इतना बरबाद कर डालते है कि झुलसकर उनकी मौत हो जाती है । जयदेव अपनी सनक में सुषमा से शादी तोड्कर गिरीश जैसे पागल से उसकी शादी करा देता है । दु:खी सुषमा शांतिनिकेतन चली जाती है । दूसरी कथा धनराज और थुलथुल की है । सिंगापुर से लौटा धनराज थुलथुल को स्वीकार नहीं कर पाता और विदेशी प्रेमिका के जाल में फँस जाता है । थुलथुल जल मरती है । इस प्रकार साहनी जी ने पारिवारिक समस्याओं का पर्दाफाश किया है ।

:: नीलू नीलिमा नीलोफर ::

साहनीजी का अंतिम उपन्यास 'नीलू नीलिमा नीलोफर' सन् २००० में प्रकाशित हुआ था । सामप्रदायिक कट्टर भावना की आंतरिक पीडा और वेदना को साहनीजी ने बडी कुशलता से व्यक्त किया है । उपन्यास के शीर्षक की बात करे तो ये नाम वास्तव में एक नाम न होकर यात्रा है जो दो सम्प्रदायों के बीच के अंतराल को काटकर मंजिल के प्राप्त न होने का संकेत करती है । नीलिमा और नीलोफर हिन्दू और मुसलमान है पर दोनों युवतियों को घर पर नीलू नाम से पुकारते है । मुस्लिम परिवार की नीलोफर हिन्दू चित्रकार से प्रेम करती है और नीलिमा की मैत्री

मुसलमान युवक अल्ताफ से है । नीलोफर हिन्दू सुधीर से धर्मनिरपेक्ष को छोड्कर शादी करती है। पर धर्म संप्रदाय की कटुता इस वैवाहिक संबंध में बाधा डालती है । धोखे से नीलोफर का भाई उसका गर्भपात कराकर अधेड उम्र के मुसलमान से आके विवाह की योजना बनाता है । दूसरी तरफ नीलिमा पारिवारिक प्रसन्नता के अपनी आकांक्षा को छोड्कर अल्ताफ को छोड हिन्दू युवक सुबोध से शादी कर लेती है । सुबोध उसे हर वक्त अपमानित कर नीचा दिखाने की कोशिश करता है । वह अपने मुताबिक नीलिमा पर आदेश डालता है । नीलिमा त्रस्त होकर आत्महत्या कर लेती है । साहनीजी ने इस संदर्भ में दिखाया है कि, ''अपने ही धर्म के सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से उपयुक्त समझे जाने वाले युवक को पाकर नीलिमा सुखी नहीं रह पायी । साहनीजी ने हिन्दू–मुस्लिम संप्रदाय के लोगो में विकसित मानवीय संबंधो की वस्तुस्थिति को यथार्थ धरातल पर पहचानने का प्रयत्न किया है ।''[२४]

नाटक :

साहनीजी ने साहित्य साधना से विविध विधाओं में सृजन कर समकालीन साहित्य को समृद्ध किया है । साहनीजी ने नाट्य जगत में अपनी अनूठी नाट्य कृतियों को रखा है । उनके नाटक इतिहास, पुराण, मिथक, लोककथा और किवदन्तियों पर आधारित है । साहनीजी पर अपने बडे भाई बलराज साहनी के अभिनय का प्रभाव भी दिखाई देता है । जिनके कारण साहनीजी का अनुभव क्षेत्र बढता गया और नाट्य साहित्य में अमर स्थान पाया ।

उनके नाटक साहित्य का संक्षिप्त विवेचन निम्न लिखित है । साहनीजी ने ७ नाटक लिखे थे ।

'हानूश', 'कबिरा खडा बाजार में', 'माधवी', 'मुआवजे', 'रंग दे बसंती चोला', 'फूजीयामा', 'आलमगीर'

:: हानूश ::

साहनीजी का पहला नाटक हानूश सन् १९७७ में प्रकाशित हुआ था । नाटक में एक कलाकार के जीवन का मार्मिक चित्रण है । हानूश नाम का पात्र बडी मेहनत और लगन से एक सुन्दर घडी बनाता है । वहाँ का बादशाह यह सोचकर उस कलाकार की आँखे निकलवा देता है कि वह फिर ऐसी घडी ना बना सके । एक बार घडी बिगड जाती है । अंधा हानूश फिर भी घडी को ठीक कर देता है और जेकब के माध्यम से यह राज भी राज्य के बाहर पहुँचा देता है कि घडी हानूश ने बनाई थी राजा ने नहीं । चेकोस्लोवाकिया की दंतकथा पर आधारित संपूर्ण मंचीय नाटक साहनीजी ने लिखा था ।

:: कबिरा खडा बाजार में ::

सन् १९८१ में प्रकाशित हुआ कबिरा खडा बाजार में साहनीजी का दूसरा नाटक है । जो लगभग दो सौ पृष्ठो का है । जो तीन अंको एवं सात कृष्यों में सम्मिलित है । इस नाटक में भक्तिकाल के महान निर्गुण मार्गी भक्त कवि कबीरदास को जीवन को लिया गया है जिसमें कबीरजी के जीवन की घटनाओं में शरारती बचपन, मस्तमौलापन, साहित्य सृजन की मौलिकता को सम्मिलित किया गया है ।

:: माधवी ::

महाभारत के कथानक पर आधारित यह साहनीजी का तीसरा नाटक है । जो सन् १९८४ में प्रकाशित किया गया था । नाटक में पौराणिक कथा का आधार लेकर मूल कथा में नवीनता लाई गयी है । आचार्य विश्वामित्र के शिष्य लगाव को गुरूदक्षिणा के रूप में ८०० अश्वमेघी घोडे देने है । दानशूर महाराज यत्राति से चिर तारूण्य और चक्रवर्ती पुत्र की माता होने का वरदान प्राप्त माधवी को लेकर तीन राजाओं के पास जाकर वह ६०० घोडे प्राप्त करता है, लेकिन इसी बीच माधवी और गालव एकदूसरे के प्रति आकृष्ट होते है । बाद में माधवी के स्वयंवर

की बात, गालव से माधवी को अनुष्ठान करने की चर्चा सामने आती है । इस प्रकार पुरूष के हाथो नारी के शोषण की मार्मिक अभिव्यक्ति प्रस्तुत की गई है ।

:: मुआवजे ::

सन् १९९३ में प्रकाशित हुआ यह नाटक साहनीजी का चौथा नाटक है । सि नाटक में भारतीय समाज की व्यग्यता भरी हुई है । जिसमें कुल १२ दृश्य है । सामाजिक दंगे खडे करनेवाले पुलिस कमिश्नर और धार्मिक दंगे खडे करने वाले नेताओं का यथार्थ चित्रण किया गया है । अंदरूनी पोल खोलने की नीति को भी नाटक में स्थान मिला है । अमारो की गरीबों की जमीन कम दाम में खरीदने की प्रथा और सामान्य आदमी की मुआवजा लेकर अपनी बेटी की शादी लंगडे रिक्षावाले के साथ कर देने की नीति को सामने रखा गया है । आदमी की स्वार्थ परीयता इतनी हद तक आगे बढ गई है कि वह वक्त आने पर किसीभी चीज का सौदा करने से नहीं हिचकिचाते ।

:: रंग दे बसंती चोला ::

साहनीजी का पाँचवा नाटक रंग दे बसंती चोला सन् १९९६ में प्रकाशित हुआ था । इस नाटक में तीन अंक है । पहले में दो दृश्य, दूसरे में तीन और तीसरे में पाँच दृश्य दिव्यमान है । जलियावाला बाग हत्याकांड की ऐतिहासिक घटना को आधार बनाकर इस नाटक का निर्माण हुआ है । जिसमें पंजाब की तत्कालीन स्थिति और रीतरस्मों को भी शामिल किया है । पूरा नाटक एक श्रृंखला की धारा से बहता हुआ आगे बढता है ।

:: फूजीयामा ::

चिंगेजआइतमातोव और कलताई मेहम्मेजानोव द्वारा लिखित इस रूसी नाटक का अंग्रेजी में अनुवाद कल्पना साहनी ने किया और अंग्रेजी का हिन्दी अनूवाद साहनीजी ने किया। यह अनूदित नाटक बुद्धिजीवियों की मानसिकता को अंकित करता है। सुबह और शाम इन दो भागो में

खेलते इस नाटक में कुल नौ पात्र है। राजकीय कृषि फार्म के उच्च पदस्थ और बडी उम्र के सभी कृषि विशेषज्ञ की पत्नी द्वारा शोधित फूजीयामा नामक पहाडी पर जाते है। वहाँ उनकी चर्चा के विषय में झगडा हो जाने पर ढलान पर से पत्थर नीचे फेंकने का खेल खेला जाता है। दूसरे दिन वहाँ पुलिस आकर कहती है कि रात में फेंके गए पत्थरो के कारण एक बुढिया मर गयी है। यह सुनकर सब बडे लोग भागने का प्रयास करते है। इस कथा पर आधारित नाटक फूजीयामा है।

:: आलमगीर ::

साहनीजी का सातवाँ नाटक आलमगीर न् १९९९ में प्रकाशित हो चुका था । जिसमें बादशाह औरंगजेब के जीवन की प्रमुखतम् घटनाओं को चुना गया है । इसमें दश दृश्यों को लिया गया है । साहनीजी ने अपनी कल्पना शक्ति अनुसार इनमें से कुछ प्रमाणों को प्रस्तुत किया है । ऐसी नाटक में विशेषता भी है जो इतिहास ने पाठकों के सामने नहीं रखी है । सारे नाटक का माहौल ऐतिहासिक न होकर भाषा को भी बखूबी प्रस्तुत किया है । नाटक के आरंभ से अंत तक आलमगीर औरंगजेब शक के घेरे में फँसा दिखता है और अपने ही द्वारा बुने गये जाल के कारण अकेला पड जाना है ।

अत: साहनीजी के नाट्यसृजन को देखकर यह कहाँ जा सकता है कि, 'साहनीजी का नाट्यसाहित्य समाज के पीड्ति वर्ग की वाचा है ।'

साहनीजी के अन्य साहित्यसृजन की चर्चा निम्नलिखित है । जिसमें साहनीजी ने अनुवादक, निबंधकार, आत्मकथाकार, बालसाहित्यकार और संपादक की भूमिका अदा की है ।

२.२.१.३ : निबंध

निबंधकार के रूप में साहनीजी की यात्रा आगे बढी और श्रेष्ठतम् निबंध में सन् १९९० में साहित्यिक निबंध संकलित किए गए जिसमें; 'गर्दिश के दिन', 'में अपनी नजर में', 'अपनी बात', 'वे दिन', 'जब मैने पहली कहानी लिखी' शामिल है । उनके व्यावसायिक निबंध के दृष्टिकोण की सूक्ष्म परख में भी निबंध लिखे गये जिसमे; 'कहानी और व्यवसायिकता' और

'मार्कसवाद और साहित्य' को स्थान मिला । उनकी विवेचनात्मक निबंध में 'इक्के' और 'लेखक की स्वतंत्रता का सवाल' है ।

२.२.१.४ :डायरी

फिल्मी डायरी के अन्तर्गत इस निबंध संग्रह में तमस उपन्यास पर गोविंद निहलानी ने जो टी.वी.सीरियल बनाया था उसके अनुभवो का उल्लेख किया है । इसे टी.वी. धारावाहिक में स्वयं साहनीजी ने हरनाल सिंह चाय वाले की भूमिका निभाई थी । शूटिंग के दौरान जिन घटनाओं के साथ वे गुजरे उनका रेखांकन इस डायरी में किया गया है ।

२.२.१.५ : आत्मकथाकार

उनके आत्मकथात्मक साहित्य में 'आज के अतीत' और 'मेरे भाई बलराज' उल्लेखनीय है । हमें इस आत्मकथा के पढने के बाद यह स्वीकार करना पडेगा कि उनकी आत्मकथा उत्कृष्ट और यादगार दास्ता का समन्वय है ।

२.२.१.६ : बालसाहित्य

उत्कृष्ट बाल साहित्य के सर्जनहार में शामिल साहनीजी की दो महत्त्वपूर्ण बाल रचनाएँ मिलती है । इन 'मुलेल का खेल' और 'वापसी' है । दोनो बाल साहित्य जिज्ञासा निर्माण करने वाले और सफल रचना में स्थान रखनेवाले है । 'गुलेल का खेल' सन् १९८६ में प्रकाशित की गई कहानी ह । जो एक शरारती और हिंसक बालक बाधराज को केन्द्र में रखकर लिखी गई है । 'वापसी' कहानी भी १९८६ में प्रकाशित हुई जिसमें बलीराम सर्कस वालें और उनके सर्कस के प्राणीओं की कहानी है । जो बाल मनोविज्ञान पर आधारित है ।

२.२.१.७ : अनुवादक

साहनीजी ने विभिन्न क्षेत्रो में अनुवादक की भूमिका निभायी थी । प्रथम भारत सरकार के द्वारा भीष्मजी का चयन अनुवादक के रूप में सोवियत संघ के लिए हुआ था । साहनीजी ने विदेशी भाषा प्रकाशन गृह मास्को में ७ साल तक अनुवाद का कार्यभार संभाला था । सन् १९६३ तक प्रगति प्रकाशन गृह में भी अनुवाद कार्य किया । सन् १९५७ से १९६३ में दो दर्जन रूसी किताबों का अनुवाद कार्य किया था । साहनीजी ने 'मेरे भाई बलराज' नामक आत्मकथा का भी अंग्रेजी से हिन्दी में भाषांतर किया । साथ है लियो टाल्सटोय के उपन्यास 'पुनरूत्थान' का भी अनुवाद कार्य संभाला था । इस तरह श्रेष्ठ अनुवादक की कसौटी पर भी साहनीजी खरे उतरे थे ।

२.२.१.८ : संपादक

संपादक के रूप में भी साहनीजी कार्य कर चुके है । उनकी साहित्य प्रतिभा साहित्य के सभी अंग को छूकर विकसित हुई है । उनके संपादन कार्य में 'नई कहानियाँ' नामक पत्रिका को स्थान मिला है । जिसका संपादन साहनीजी ने ढाई साल तक किया । इसके अलावा अफो एशियन राइटर्स परिसनघ में 'लॉटस' पत्रिका का संपादन कार्य भी किया । साहनीजी ने कल्चरल फोरम के साथियों के साथ मिलकर 'साहित्यकार' शीर्षक से पत्रिका निकाली थी ।

इस प्रकार हम साहनीजी की साहित्यिक यात्रा के बारे में कह सकते है कि उन्होंने हिन्दी साहित्य की अमर कृतियों में अपना अमूल्य, अतूल्य योगदान दिया है । हिन्दी साहित्य की वकासयात्रा में नींव रूप अपनी विचारशक्ति के ढाँचे को ढालकर हमारी स्थितियों का चित्रण प्रस्तुत किया है ।

निष्कर्ष :

इस प्रकार विस्तृत फलक हवं विषय – वैविध्य में फैला साहनीजी का यह कथा साहित्य आधुनिक युग का प्रामाणिक चित्र तो है ही, साथ में उसकी व्यंग्यात्मकता मानव समाज के संपूर्ण

कैनवास को प्रस्तुत करती हुई यथार्थता का दर्शन कराती है । संक्षेप में साहनीजी के साहित्य का कथ्य जहाँ विराट है । ये सभी कहानियाँ समकालीन यथार्थ जगत के अगणित चित्र ही है क्योंकि यह उनके जीवनानुभव का परिणाम है । उनके लेखन में नवीन प्रयोगो की मौलिक प्रतिभा के भी भरपूर दर्शन होते है । अत: यह विकास एक गुणात्मक विकास है । साहनीजी के साहित्य में रूपाचित स्थितियाँ, घटनाएँ और सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक यथार्थ का अनुभव होता है । उनके यहाँ वैयक्तिक और सामाजिक अनुभव का द्वेत नहीं है, न उनके समकालीन जीवन का केन्द्रीय मनुष्य पाशविक या यांत्रिक दुनिया का कुंठित, अकेला, हताश, आत्म निर्वासित या अतीत के विचारो में गुम । समाज का क्रांतिकारी परिवर्तन, मनुष्य की मुक्ति, एक बहेतर संसार की रचना यही वो परिप्रेक्ष्य है, जिसमें ये कहानिर्या लिखी गई है । उनके पीछे एक जीवन दर्शन और मूल्य दृष्टि है, एक विचारात्मक विवेक और विश्वदृष्टि है । यही कारण है कि मामूली से मामूली आदमी के दु:ख–दर्द, मध्यवर्गीय चरित्त की विसंगतियों, निम्न मध्यवर्गीय मजबूरियों से ही यह अनुभव संसार रूपायित हुआ है । इन कहानियों के चरित्रों की व्यापकता के कारण विषय–वस्तु भी इतनी विविधात्मक हो गयी है कि समाज का कोई भी पक्ष छूट नहीं पाया । साहनीजी की कहानियों का कथ्य जहाँ विराट है, वहीं उसका शिल्प मौलिक है । क्योंकि यह उनके जीवनानुभव का परिणाम है ।

संदर्भसूची

१) भीष्म साहनी के उपन्यास नये मूल्यों की तलाश, डॉ. मीनाक्षी शर्मा, पृ.४७

२) कहानीकार भीष्म साहनी – डॉ. रीना पटेल, पृ.१२

३) कथाकार भीष्म साहनी – डॉ. कृष्णा पटेल, पृ. १५

४) वही – पृ.१७

५) तमस एक अध्ययन – डॉ. अर्चना जैन, पृ. ९

६) नाटककार भीष्म साहनी – डॉ. सुरैया शेख, पृ. ११

७) कथाकार भीष्म साहनी – डॉ. कृष्णा पटेल, पृ. १६

८) भीष्म साहनी की कहानियों में मानवीय संबंध – डॉ. संजय गड्पायले, पृ. ११

९) भीष्म साहनी नये मूल्यों की तलाश – डॉ. मीनाक्षी शर्मा, पृ. ५०

१०) भीष्म साहनी की कहानियों में मानवीय संबंध – डॉ. संजय गड्पायले, पृ. १६

११) कथाकार भीष्म साहनी – डॉ. कृष्णा पटेल, पृ.१६

१२) तमस एक अध्ययन – प्रा. अर्चना जैन, पृ. १०

१३) भीष्म साहनी की कहानियों में ना मानवीय संबंध – डॉ. संजय गड्पायले, पृ. १६

१४) वही – पृ. १६

१५) भीष्म साहनी के उपन्यास नयें मूल्यो की तलाश, डॉ. मीनाक्षी शर्मा, पृ. ५६

१६) नाटककार भीष्म साहनी – सुरैया शेख, पृ.११

१७) कथाकार भीष्म साहनी – डॉ. कृष्णा पटेल, पृ. १८

१८) तमस उपन्यास में देश विभाजन की त्रासदी – प्रा. दिलीप फौलाने, पृ. १३

१९) वही – पृ.१३

२०) भीष्म साहनी की कहानियों में मानवीय संबंध – डॉ. संजय गड्पायले, पृ. १७

२१) भीष्म साहनी के उपन्यास नये मूल्यो की तलाश – डॉ. मीनाक्षी शर्मा, पृ. ५२

२२) भीष्म साहनी की कहानियों में मानवीय संबंध, डॉ. संजय गड्पायले, पृ. १८

२३) भीष्म साहनी के उपन्यास नये मूल्यों की तलाश – डॉ. मीनाक्षी शर्मा, पृ.५५

२४) नाटककार भीष्म साहनी – डॉ. सुरैय्या शेख, पृ. १३

२५) नाटककार भीष्म साहनी – डॉ. सुरैय्या शेख, पृ. १३

२६) कहानीकार भीष्म साहनी – डॉ. रीना पटेल, पृ.२१

२७) नाटककार भीष्म साहनी – डॉ. सुरैय्या शेख, पृ.१६

२८) वही – पृ.१६

२९) भीष्म साहनी की कहानियों में मानवीय संबंध – डॉ. संजय गड्पायले, पृ. २०

३०) वही – पृ.२०

३१) वही – पृ.२२

३२) वही – पृ.२३

३३) कहानीकार भीष्म साहनी – डॉ. रीना पटेल, पृ.२२

३४) भीष्म साहनी की कहानियों में मानवीय संबंध – डॉ. संजय गड्पायले, पृ. ३०

३५) वही – पृ.३२

३६) वही – पृ.३३

३७) वही – पृ.३४

३८) तमस एक अध्ययन – प्रा. अर्चना जैन, पृ.११

३९) भीष्म साहनी के उपन्यास नयें मूल्यों की तलाश – डॉ. मीनाक्षी शर्मा, पृ.६४

४०) वही – पृ.६५

४१) वही – पृ.६६

४२) वही – पृ.६९

४३) वही – पृ.७२

४४) भीष्म साहनी, 'भाग्यरेखा', प्रकाशकीय वक्तव्य से।

४५) भीष्म साहनी, 'पहलापाठ', प्रकाशकीय वक्तव्य से।

४६) भीष्म साहनी, भटकती राख, 'यादे', पृ.सं.१६

४७) डॉ. सुरेश बाबर, भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन, पृ.सं.१३४

४८) भीष्म साहनी, भटकती राख, प्रकाशकीय वक्तव्य से।

४९) भीष्म साहनी, पटरियाँ प्रकाशकीय वक्तव्य से।

५०) भीष्म साहनी, पटरियाँ, अमृतसर आ गया है, पृ.सं.२१

५१) भीष्म साहनी, पटरियाँ, ललक, पृ.सं.२४

५२) डॉ. प्रमिला अग्रवाल, भारत विभाजन और हिन्दी कथा साहित्य, पृ.सं.६१

५३) भीष्म साहनी, पटरियाँ, दोरे, पृ.सं.५७

५४) भीष्म साहनी, पटरियाँ, तस्वीर, पृ.सं.५८

५५) भीष्म साहनी, पटरियाँ, तस्वीर, पृ.सं.६४

५६) रमाकांत श्रीवास्तव, भीष्म साहनी व्यक्ति और रचना, सं. राजेश्वर सक्सेना प्रताप ठाकुर, पृ.सं.६५

५७) नन्दकिशोर नवल, भीष्म साहनी व्यक्ति और रचना, सं. राजेश्वर सक्सेना प्रताप ठाकुर, पृ.सं.१०३

५८) भीष्म साहनी, वाङ्चू, राधा–अनुराधा, पृ.सं.१३६

५९) भीष्म साहनी, वाङ्चू, प्रकाशकीय वक्तव्य से।

६०) नन्दकिशोर नवल, भीष्म साहनी व्यक्ति और रचना, सं. राजेश्वर सक्सेना प्रताप ठाकुर पृ.सं.१०४

६१) भीष्म साहनी, शोभायात्रा : प्रकाशकीय वक्तव्य से

६२) भीष्म साहनी, शोभायात्रा : निमित, पृ.सं.६

६३) भीष्म साहनी, निशाचर–प्रकाशकीय वक्तव्य से

६४) भीष्म साहनी, पाली, पृ.सं.६

६५) भीष्म साहनी, डायन प्रकाशकीय वक्तव्य से।

६६) कमलेश्वर, आलेख संवाद वर्ष–१ अंक ८६ जुलाई–अगस्त २००३, प्र.क.

६७) मोहन राकेश, साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि पृ.६७

६८) भीष्म साहनी, प्रकाशकीय वक्तव्य से।

६९) डॉ. गणेशदास, स्वात्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी के विविध रूप